शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार

मनोहरसिंह राणावत

शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार

(फारसी आधार-ग्रंथों की सूचियों से संकलित)

सम्पादक

मनोहरसिंह राणावत

राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर

प्राप्ति स्थान :-

राजस्थानी ग्रन्थागार
पुस्तक प्रकाशक व विक्रेता,
सोजती गेट के बाहर, जोधपुर

प्रथम संस्करण · १९८३

मूल्य : पैंतीस रुपये मात्र

समर्पण

राजस्थान विद्यापीठ

के

सस्थापक उपकुलपति,

महान शिक्षा-विद् एव मनीषी साहित्यकार

पं० जनार्दनराय नागर

को

प्रस्तावना

मुगल सम्राट् शाहजहां का शासन-काल मुगल साम्राज्य का स्वर्ण युग कहा जाता है, तत्कालीन की ही तरह आधुनिक मुगल इतिहासकारों के लिये भी वह सफलतादायक स्वर्ण-युग प्रमाणित हुआ है. आचार्य यदुनाथ सरकार ने अपने सुविख्यात वृहत् ग्रन्थ "हिस्ट्री आफ औरंगजेब" के प्रथम दो खण्डों में इसी शासन-काल से विशिष्ट पक्ष पर सयत्न पूरा-पूरा प्रकाश डाला है. डा० बनारसी प्रसाद सक्सेना ने अपने सफल शोध ग्रंथ "हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ देहली" में अपने चरित्र-नायक के जीवनकाल की विभिन्न परम्पराओं को क्रमबद्ध करने का प्रयत्न किया है. डा० कालिकारंजन कानूनगो ने अपने अंतः प्रवेशी प्रेरक ग्रंथ 'दारा शिकोह" में उस काल के अनोखे सांस्कृतिक पहलू को प्रस्तुत करते हुए अनिवार्य रूपेण विफल हुई मुगल इतिहास तथा भारतीय संस्कृति की एक आशापूर्ण संभावना की ओर संकेत किया है. इतना सब लिखे जाने पर भी तत्कालीन इतिहास पर अधिकाधिक नई शोध की संभावनायें आज भी यथावत् बनी हुई है.

कुछ विशिष्ट वीरों की जीवनियों के साथ ही उत्तराधिकार संग्राम के निर्णायक समर धरमाट के युद्ध संबंधी विशेष अध्ययन और गहरी छानबीन के संदर्भ में मुझे भी शाहजहां की विभिन्न गतिविधियों तथा तत्कालीन इतिहास का बहुत कुछ अनुशीलन करना पड़ा था तब तत्सम्बन्धी अपनी नित्य प्रति की आवश्यकता के लिये मैंने समकालीन फारसी इतिहास ग्रंथों में दी हुई शाहजहाँ के सब ही मनसबदारों की चारों विभिन्न सूचियों को यथावत् देवनागरी में लिखवा लिया था. मेरे संग्रह में यदा-कदा पहुँचने वाले फारसी लिपि से अनभिज्ञ अनेकानेक सुविज्ञ संशोधकों ने भी मेरी इन सूचियों को बहुत ही उपयोगी पाया और उन्होंने मुझ से बारबार यह आग्रह किया कि कम से कम शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदारों की सूचियों को तो अवश्य ही शीघ्र प्रकाशित....

प्रस्तावना

मुगल सम्राट् शाहजहा का शासन-काल मुगल साम्राज्य का स्वर्ण युग कहा जाता है, तत्कालीन की ही तरह आधुनिक मुगल इतिहासकारो के लिये भी वह सफलतादायक स्वर्ण-युग प्रमाणित हुआ है. आचार्य यदुनाथ सरकार ने अपने सुविख्यात वृहत् ग्रन्थ "हिस्ट्री आफ औरगजेब" के प्रथम दो खण्डो मे इसी शासन-काल से विशिष्ट पक्ष पर सयत्न पूरा-पूरा प्रकाश डाला है. डा० बनारसी प्रसाद सक्सेना ने अपने सफल शोध ग्रथ "हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ देहली" मे अपने चरित्र-नायक के जीवनकाल की विभिन्न परपराओ को क्रमबद्ध करने का प्रयत्न किया है. डा० कालिकारजन कानूनगो ने अपने अत· प्रवेशी प्रेरक ग्रथ 'दारा शिकोह" मे उस काल के अनोखे सास्कृतिक पहलू को प्रस्तुत करते हुए अनिवार्य रूपेण विफल हुई मुगल इतिहास तथा भारतीय सास्कृति को एक आशापूर्ण सभावना की ओर सकेत किया है. इतना सब लिखे जाने पर भी तत्कालीन इतिहास पर अधिकाधिक नई शोध की सभावनायें आज भी यथावत् बनी हुई है

कुछ विशिष्ट वीरो की जीवनियो के साथ ही उत्तराधिकार सग्राम के निर्णायक समर धरमाट के युद्ध संबधी विशेष अध्ययन और गहरी छानबीन के सदर्भ मे मुझे भी शाहजहाँ की विभिन्न गतिविधियों तथा तत्कालीन इतिहास का बहुत कुछ अनुशीलन करना पड़ा था तब तत्सम्बन्धी अपनी नित्य प्रति की आवश्यकता के लिये मैंने समकालीन फारसी इतिहास ग्रथो मे दी हुई शाह-जहाँ के सब ही मनसबदारो की चारो विभिन्न सूचियो को यथावत् देवनागरी मे लिखवा लिया था मेरे सग्रह मे यदा-कदा पहुँचने वाले फारसी लिपि से अनभिज्ञ अनेकानेक सुविज्ञ सशोधको ने भी मेरी इन सूचियो को बहुत ही उपयोगी पाया और उन्होंने मुझ से बारंबार यह आग्रह किया कि कम से कम शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदारो की सूचियो को तो अवश्य ही शीघ्र प्रकाशित

करवा दिया जावे, जिससे तत्कालीन राजस्थान अथवा मराठा इतिहास के सशोधकों का वे सुलभ हो सकें अत तदनुसार उन चारो सूचियो मे से प्रत्येक मे उल्लिखित हिन्दू मनसबदारो की नामावलियाँ कोई चार वर्ष पहिले ही अलग-अलग सकलित कर ली गई थी

इन नामावलियो का उपयोग करते समय ही यह बात स्पष्ट हो गई थी कि फारसी लिपि को अपूर्णता प्रतिलिपिकारो की असावधानी अथवा बाद के सकलनकर्त्ता के अज्ञान के कारण उनमे दिये गये हिन्दू नामो मे तो अवश्य ही यत्र-तत्र कई अशुद्धिया ही नही, किन्तु अनेक पारस्परिक विभिन्नताएँ भी आ गई है, ऐसी अशुद्धियाँ अथवा भूल क्वू द्वारा दी गई सूची मे बहुत अधिक है अत इनके सशोधन और समन्वय अत्यावश्यक ही नही थ किन्तु इन सूचियों के प्रकाशन की योजना के सदर्भ मे वे सवथा अनिवार्य भी हो गये पुन इन सब ही सूचियो मे अनेको नाम साधारणतया अज्ञात व्यक्तियों के भी थे, जिनकी ठीक पहिचान और सही परिचय जानना आवश्यक प्रतीत हुआ यों 'शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार' की प्रेस-कापी तैयार करने के हेतु उसका अत्यावश्यक सशोधन तथा सपादन कर सकने के लिये विस्तृत खोज और गहरे अध्ययन मे विशेष समय लगने की सभावना सुस्पष्ट हो गई अत बहुत चाहते हुए भी समयाभाव के कारण ही मैं स्वय इस महत्त्वपूर्ण उपयोगी कार्य को अब तक हाथ मे नही ले सका था

इधर अपनी एम० ए० परीक्षा से निपट कर जून, १९७१ ई. मे मनोहरसिह राणावत ऐतिहासिक शोध-कार्य सम्बन्धी क्रियात्मक प्रशिक्षण प्राप्त करने के दृढ निश्चय के साथ मेरे पास पहुँचा एम० ए० परीक्षा के लिये अपने शोध निबध "भरतपुर-नरेश जवाहरसिह और उसका काल (१७६३-६८ ई०)" के लिये आवश्यक आधार-सामग्री के सकलन और उसके लेखन में मेरा निर्देशन प्राप्त करने के हेतु जब वह पहिले मुझ से मिला था, तब ही ऐतिहासिक शोध के प्रति उसकी गहरी लगन, पूरी तत्परता, तदर्थ अत्यावश्यक सूझ-बूझ और अथक परिश्रम करने के उसके निश्चय तथा सामर्थ्य का बहुत कुछ पता मुझ लग चुका था. अत मैंने "शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार" के सशोधन और सपादन का

का काम उसे सौंप दिया, जिससे ऐतिहासिक शोध के लिये अत्यावश्यक उसका बहु-विध प्रशिक्षण भी साथ ही हो सके.

कई महीनो के अध्ययन, सूझ-बूझ के साथ निरन्तर जाँच-पड़ताल तथा बड़े परिश्रम के द्वारा मनोहरसिंह राणावत ने मेरे निर्देशन मे इस कार्य को पूरा किया है जिन आधार-ग्रथो से ये सूचियाँ सकलित की गई है, उनकी पृष्ठ-सख्या के उल्लेख यथा-स्थान दे दिये गये हैं फारसी ग्रथो की सूचियो मे दिये गये नामो की भूलो को जहाँ समुचित रूपेण सशोधित कर दिया गया है, वहाँ अशुद्ध मूल पाठ पाद-टिप्पणी मे दे दिये गये हैं. अन्य अत्यावश्यक उपयुक्त सशोधनो का सकेत पाद-टिप्पणियो मे किया गया है

शाहजहाँ के शासन-काल के प्रथम दौर सम्बन्धी इतिहासो मे कई एक ऐसे शाही मनसबदारो के विवरण तथा उन्हे दिये गये उच्च मनसब आदि के उल्लेख मिलते है जिनके नाम लाहोरी तथा वक़्त की सूचियो मे सम्मिलित नही हैं अत शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदारो की जानकारी को परिपूर्ण करने के लिये इन उच्च श्रेणीय मराठा या राजपूत मनसबदारो सम्बन्धी जानकारी को परिशिष्ट १ मे एकत्र कर दिया गया हैं इसी प्रकार शाहजहाँ के शासन-काल के कुछ निम्नतर स्तोरीय हिन्दू मनसबदारो के नाम तथा उसके मनसब आदि की जो प्रमाणिक जानकारी मिल सकी है उसे भी अलग परिशिष्ट २ सकलित कर दिया गया है

मेरे सुझाव पर विभिन्न मनसबदारो पर सक्षिप्त टिप्पणियाँ भी लिखी गई है और कई एक के सबध मे विशेष अध्ययन करने को समुत्सुक सशोधको को अधिक जानकारी सुलभ कर देने के उद्देश्य से तद्विषयक आवश्यक उपयोगी विशेष सदर्भो के उल्लेख भी इन टिप्पणियो मे दे दिये हैं देश-काल की बदलती हुई परिस्थितियो मे अब महत्वहीन या अज्ञात स्थानो या क्षेत्रो आदि के बारे मे भी सक्षिप्त जानकारी दी गई है यो इस प्रकाशन को हर तरह से उपयोगी और परिपूर्ण बनाने के लिये पूरा प्रयत्न किया गया है

मुझे विशेष प्रसन्नता है कि बरसो पहले नकल की गई उन सूचियो मे अत्यावश्यक सशोधन, महत्वपूर्ण उपयोगी सवर्द्धन

और उनका समुचित सपादन कर मनोहरसिंह राणावत ने उन्हे प्रकाशन के योग्य बनाया इस पुस्तक के प्रकाशक, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, का भी अनुगृहीत हू, क्योकि वरसो से चल रही तत्सबंधी मेरी इच्छा को पूरा करने मे वे या क्रियात्मक सहयोग दे रहे हैं बहुत चाहने पर भी जो काम मैं पूरा नही कर पाया, उसे आज अपने सुयोग्य होनहार शिष्य के हाथो यथेष्ट रूप मे पूरा होते देख कर मैं विशेष सतोष और यथार्थ गौरव का अनुभव कर रहा हू मेरा विश्वास है कि इन सूचियो को इस सशोधित सवर्द्धित सुसम्पादित रूप मे उन्हें सुलभ कर देने के लिये भावी सशोधक भी मनोहरसिह राणावत के सदैव अनुगृहीत रहेगे

रघुवीरसिंह

विषय सूची

—

चित्र-सूची

पादशाहनामा

अब्दुल हामिद लाहोरी कृत

जिल्द १-ब

पहिला दौर जुलूसी
(सन् १-१०)

५००० पांच हजारी

पृ० २९४

राणा जगतसिंह
 ५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.

राजा गजसिंह राठौड़, पिता राजा सूरजसिंह
 ५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.

राजा जयसिंह कछवाहा
 ५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.

राव रतन हाड़ा
 ५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.
 साल ४ जुलूसी में वाला घाटे में मर गया.

राजा जुझारसिंह बुंदेला, पिता राजा नरसिंहदेव
 ५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.
 साल ८ जुलूसी में विद्रोही हो कर मर गया.

पृ० २९५

मालूजी, भाई खेलूजी दक्खिनी
 ५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.

ऊदाजीराम दक्खिनी
 ५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.
 साल ६ में मृत्यु हो गई.

बहादुरजी दक्खिनी, पिता जादोंराय
 ५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.
 साल ८ मे मृत्यु हो गई.

४००० चार हजारी

पृ० २६६

राजा भारत बुन्देला
 ४००० चार हजारी– ३५०० तीन हजार पांच सौ सवार.
 साल ७ मे मृत्यु हो गई.

राजा विट्ठलदास गौड़
 ४००० चार हजारी– ३००० तीन हजार सवार.

पृ० २६७

राव सूर भुरटिया
 ४००० चार हजारी– ३००० तीन हजार सवार.
 साल ४ मे मृत्यु हो गई

जगदेवराय, भाई जादोराय दक्खिनी
 ४००० चार हजारी– ३००० तीन हजार सवार.
 साल ५ मे मृत्यु हो गई.

हमीरराय दक्खिनी
 ४००० चार हजारी– २५०० दो हजार पांच सौ सवार.
 साल ७ मे मृत्यु हो गई.

३००० तीन हजारी

राव सतरसाल हाड़ा, पोता राव रतन का
 ३००० तीन हजारी– ३००० तीन हजार सवार.

पृ० २६८

अमरसिंह राठौड़, पिता राजा गजसिंह
 ३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

माधोसिंह हाड़ा, पिता राव रतन
 ३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

राजा पहाड़सिंह बुन्देला, पिता राजा नरसिंहदेव
३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.
साल ५ में मृत्यु हो गई [1].

राजा जगतसिंह, पिता राजा बासू
३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

पृ० २६६

ऊदाजीराम, पिता ऊदाजीराम दक्खिनी
३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

राजा रायसिंह सीसोदिया, पिता महाराजा भीम
३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

राजा अनूपसिंह
३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.
साल १० में मृत्यु हो गई.

मन्नूजी दक्खिनी
३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

परसूजी दक्खिनी
३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

जादोराय दक्खिनी
३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

राजा मनरूप कछवाहा
३००० तीन हजारी– १००० एक हजार सवार.
साल ३ में मृत्यु हो गई.

दत्ताजी,[2] पिता बहादुरजी दक्खिनी
३००० तीन हजारी– १००० एक हजार सवार.

० २१८

१. संभवतः प्रतिलिपिकार की असावधानी से ही यह लिखा गया होगा, क्योंकि पहाड़सिंह की मृत्यु सन् १६५४ ई० में ही हुई थी.

२. मूल पाठ 'दयाजी'

पृ० ३००

२५०० दो हजार पांच सदी

राजा वेवीसिंह, पिता राजा भारत बुंदेला

२५०० दो हजार पांच सदी–२००० दो हजार सवार.

पृ० ३०१

२००० दो हजारी

जुगराज बुंदेला

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार

साल ८ मे अपने पिता के साथ मारा गया.

पृथ्वीराज राठौड़

२००० दो हजारी– १७०० एक हजार सात सौ सवार.

पृ० ३०२

राव करण, पिता राव सूर भुरटिया

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

राव दूदा, पोता राव चांदा का

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

साल ६ मे दोलताबाद की लडाई मे काम आया.

रावत राय धनगर दक्खिनी

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार

बिहारीदास कछवाहा

२००० दो हजारी– १२०० एक हजार दो सौ सवार.

साल ४ मे मर गया

पृ० ३०३

राजा रामदास नरवरी

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार

अनीराय[3]

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार.

---

3. 'अनीराय' की उपाधि अनूपसिंह बडगूजर की ही थी. भ्रमवश यह उल्लेख दोहराया गया है .

पीथूजी, पिता अचलाजी दखिखनी

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार.

हावाजी देवरिया (अथवा पूरिया)

२००० दो हजारी– ८०० आठ सो सवार.

पृ० ३०४

१५०० एक हजार पांच सदी

रावल पूंजा, जमींदार डूंगरपुर

१५०० एक हजार पांच सदी– १५०० एक हजार पांच सो सवार.

पृ० ३०५

शिवराम गोड़, पिता बलराम

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

हरदेराम, पिता बांका कछवाहा

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.
साल ६ में मर गया.

राजा द्वारकादास, पिता राजा गिरधर कछवाहा

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.
साल ४ में खानजहां लोदी के विरोध में काम आया.

सतरसाल कछवाहा

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.
साल ३ में खानजहां लोदी के विरोध में काम आया.

राव हठीसिंह[४], पिता राव दूदा चन्द्रावत

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

राजा प्रतापसिंह उज्जैनिया

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.
साल १० में अब्दुल्ला खां के हाथ से मारा गया.

पृ० ३०६

---

४. 'मूल पाठ मथीसिंह'

करमसी राठौड़

१५०० एक हजार पांच सदी– ८०० आठ सौ सवार.

साल ३ में खानजहां के विरोध में मारा गया.

भीम राठौड़

१५०० एक हजार पांच सदी– ८०० सौ सवार.

चन्द्रमन बुन्देला

१५०० एक हजार पांच सदी– ८०० आठ सौ सवार.

जगमाल राठौड़, पिता किशनसिंह

१५०० एक हजार पांच सदी– ८०० आठ सौ सवार.

साल २ मे मृत्यु हो गई.

संग्राम, जमींदार गन्नौर

१५०० एक हजार पांच सदी– ६०० छः सौ सवार.

पृ० ३०७

१००० एक हजारी

रावल समरसी,[५] जमींदार बांसवाला

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

पृ० ३०८

हरीसिंह राठौड़, पिता किशनसिंह

१००० एक हजारी– ८०० आठ सौ सवार.

जयराम, पिता राजा अनीराय

१००० एक हजारी– ८०० आठ सौ सवार.

पृ० ३०६

बलभद्र शेखावत

१००० एक हजारी– ६०० छः सौ सवार.

साल ३ में खानजहां लोदी के विरोध में काम आया.

राजा बीरनारायण बड़गूजर

१००० एक हजारी– ६०० छः सौ सवार.

साल ३ में मर गया. .

---

५. मूल पाठ 'सुरमसी'

भगवानदास, पिता राजा नरसिंहदेव बुन्देला

१००० एक हजारी– ६०० छः सौ सवार.

किशनसिंह भदोरिया

१००० एक हजारी– ६०० छः सौ सवार.

रूपचन्द गुलेरी

१००० एक हजारी– ६०० छः सौ सवार.

साल ८ में श्रीनगर की लड़ाई में काम आया.

पृ० ३१०

भारमल, पिता किशनसिंह राठौड़

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

साल १ में मृत्यु हो गई.

राजा गिरधर, पिता केसोदास, पोता जेमल मेड़तिया का

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

साल ३ में खानजहां लोदी के विरोध में काम आया.

जेतसिंह राठौड़

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

साल ३ में मृत्यु हो गई.

मित्रसेन, भाई राजा श्यामसिंह तंवर

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

साल ६ में मृत्यु हो गई.

श्यामसिंह सीसोदिया

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

पृ० ३११

राजा कुंवरसेन किश्तवारी

१००० एक हजारी– ३०० तीन सौ सवार.

पृ० ३१२

राय मानीदास

१००० एक हजारी– १५० एक सौ पचास सवार.

साल ५ में मृत्यु हो गई.

राय बनवालीदास

१००० एक हजारी– १०० एक सो सवार.

साल ४ मे मृत्यु हो गई.

९०० नौ सदी

राजा मानसिंह, गुलेरी

९०० नौ सदी– ८५० आठ सो पचास सवार.

सबलसिंह, पिता राजा सूरजसिंह राठौड़

९०० नौ सदी– ८०० आठ सो सवार.

गोपालसिंह, पिता राजा मनरूप कछवाहा

९०० नौ सदी– ६०० छः सो सवार.

गोकलदास सीसोदिया

९०० नौ सदी– ५०० पांच सो सवार.

राव हरचन्द कछवाहा

९०० नौ सदी– ४०० चार सो सवार.

साल ४ में मृत्यु हो गई.

राय काशीदास

९०० नौ सदी– ४०० चार सो सवार.

पृ० ३१३

दयानतराय

९०० नौ सदी– १५० एक सो पचास सवार.

८०० आठ सदी

महेशदास, पिता दलपत राठौड़

८०० आठ सदी– ६०० छः सो सवार.

पृ० ३१४

राय तिलोकचन्द, पोता राय मनोहर का

८०० आठ सदी– ५०० पांच सो सवार.

लखमीसेन चौहान

८०० आठ सदी– ५०० पांच सो सवार.

उग्रसेन कछवाहा

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

भोजराज, पिता रायसल दरबारी

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

राय जगन्नाथ राठौड़

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

साल ३ मे मर गया.

पृ० ३१५

राजा उदयसिंह, पिता श्यामसिंह तंवर

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

साल ३ में मर गया.

सुजानसिंह सीसोदिया

८०० आठ सदी– ३०० तीन सौ सवार.

राना जोधा, जमींदार उमरकोट

८०० आठ सदी– ३०० तीन सौ सवार.

पृ० ३१६

फतेहसिंह सीसोदिया, पिता महाराजा भीम

८०० आठ सदी– २०० दो सौ सवार.

साल १ में मर गया.

७०० सात सदी

कृपाराम गौड़

७०० सात सदी– ७०० सात सौ सवार.

सतरसाल, पिता राव सूर भुरटिया

७०० सात सदी– ६०० छः सौ सवार.

पृ० ३१७

जगन्नाथ राठौड़

७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार.

वीरनारायण, जमींदार पचेट, सूबा विहार के आधीन

७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार.

साल ६ में मर गया.

हरराम, पिता भगवानदास कछवाहा
    ७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार
रूपसिह कछवाहा
    ७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार.

पृ० ३१८

बाला, पिता राजा जगन्नाथ कछवाह
    ७०० सात सदी– २०० दो सौ सवार
    साल ३ मे मर गया
राय बनारसीदास
    ७०० सात सदी– २०० दो सौ सवार

पृ० ३१९

६०० छ सदी

श्यामसिह, पिता करमसी राठौड
    ६०० छ सदी– ४०० चार सौ सवार.
राजा उदयभान, पिता राजा गिरधर
    ६०० छ सदी– ४०० चार सौ सवार.
उग्रसेन, पिता शत्रुसाल कछवाहा
    ६०० छ सदी– ४०० चार सौ सवार

पृ० ३२०

इन्द्रसाल, पोता राव रतन का
    ६०० छ सदी– ३०० तीन सौ सवार

पृ० ३२१

मुकुन्ददास राठौड
    ६०० छ सदी– १५० एक सौ पचास सवार

५०० पांच सदी

पृ० ३२२

बरसिहदास, पिता राजा द्वारकादास
    ५०० पांच सदी– ४०० चार सौ सवार

चन्द्रभान नरुका

५०० पांच सदी– ४०० चार सो सवार.

मथुरादास कछवाहा

५०० पांच सदी– ४०० चार सो सवार.

हरीसिंह, पिता राय चांदा

५०० पांच सदी– ४०० चार सो सवार.

साल ६ में मर गया.

नाहर सोलंकी

५०० पांच सदी– ४०० चार सो सवार.

बीरभान, जमींदार चन्द्रकोना बंगाल

५०० पांच सदी– ३०० तीन सो सवार.

राजा जगमन जादों

५०० पांच सदी– ३०० तीन सो सवार.

चन्द्रभान, जमींदार कांगड़ा

५०० पांच सदी– ३०० तीन सो सवार

दलपत, पिता मांडण राठौड़

५०० पांच सदी– ३०० तीन सो सवार.

साल ३ में मर गया.

पृ० १२३

मुकुंद जादों

५०० पांच सदी– ३०० तीन सो सवार.

राजा उदयसिंह, पिता राजा मानसिंह जमींदार जंमू

५०० पांच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

साल १० में मर गया.

रावत दयालदास झाला

५०० पांच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

मानसिंह, पिता राजा विक्रमाजीत

५०० पांच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

माधोसिंह सीसोदिया

५०० पाँच सदी– २५० दो सौ पचास सवार
साल ८ मे मर गया.

पृ० ३२४

बेनीदास, पिता राजा नरसिंहदेव बुन्देला

५०० पाँच सदी– २०० दो सौ सवार.

नरहरदास, भाई बेनीदास

५०० पाँच सदी– २०० दो सौ सवार.
साल ७ मे मर गया.

बदनसिंह[५] भदोरिया

५०० पाँच सदी– २०० दो सौ सवार.

गिरधरदास, भाई राजा बिट्ठलदास

५०० पाँच सदी– २०० दो सौ सवार.

रघुनाथ, जमींदार सुसघ

५०० पाँच सदी–२०० दो सौ सवार.

पृ० ३२'

हरदास झाला

५०० पाँच सदी– २०० दो सौ सवार.
साल ३ मे मर गया.

नरहरदास झाला

५०० पाँच सदी– २०० दो सौ सवार.
साल ३ मे खानजहाँ लोदी के विरोध में काम आया.

पृ० ३२'

मुकुन्ददास, पिता राजा गोपालदास गौड़

५०० पाँच सदी– १५० एक सौ पचास सवार.
साल ४ में खानजहाँ लोदी के विरोध में काम आया.

---

५ मूल पाठ 'मदनसिंह'.

हरदेनारायण

५०० पाँच सदी– १०० एक सो सवार.

राय सभाचन्द

५०० पाँच सदी– ८० अस्सी सवार.

मंगूराम दक्खिनी

५०० पाँच सदी– ८० अस्सो सवार.

पादशाहनामा

अब्दुल हामिद लाहोरी कृत

जिल्द– २

दूसरा दौर जुलूसी
(सन् ११–२०)

५००० पाँच हजारी

पृ० ७१९

राजा जसवन्तसिंह, पिता राजा गजसिंह

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार, २५०० ढाई हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

राजा जयसिंह

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार, २००० दो हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

राजा गजसिंह

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

दूसरे दौर के पहले वर्ष में २ मोहर्रम[1] को मृत्यु हुई.

राणा जगतसिंह

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

पृ० ७२०

राजा बिट्ठलदास गौड़

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

मालूजी दक्खिनी

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

---

१. रविवार, मई ७, १६३८ ई.

राजा गजसिंह (जोधपुर)

(ब्लाक, श्री सुखवीरसिंह गहलोत, जोधपुर के सौजन्य से प्राप्त)

४००० चार हजारी

पृ० ७२१

राव अमरसिंह, पिता राजा गजसिंह

४००० चार हजारी– ३००० तीन हजार सवार.

दूसरे दौर के सातवें वर्ष में ३० जमादियुल अव्वल[२] को दीवा-नगी और बेग्रदबी की हालत मे मृत्यु हुई.

राजा रायसिंह, पिता महाराजा भीम सीसोदिया

४००० चार हजारी– २००० दो हजार सवार.

३००० तीन हजारी

पृ० ७२२

राजा पहाड़सिंह, पिता राजा नरसिंहदेव बुन्देला

३००० तीन हजारी– ३००० तीन हजार सवार, २००० दो हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

राव सतरसाल हाड़ा

३००० तीन हजारी– ३००० तीन हजार सवार.

माधोसिंह हाड़ा

३००० तीन हजारी– ३००० तीन हजार सवार.

पृ० ७२३

महेशदास, पिता दलपत राठौड़

३००० तीन हजारी– २५०० दो हजार पांच सौ सवार.

दूसरे दौर के दसवें वर्ष मे ६ सफर[३] को मृत्यु हुई.

भेरजी, जमींदार बगलाना

३००० तीन हजारी– २५०० दो हजार पांच सौ सवार.

वह भी उसी साल (दूसरे दौर के दूसरे वर्ष) में मर गया.

---

२. गुरुवार, जुलाई २५, १६४४ ई.

३. रविवार, मार्च ७, १६४७ ई.

पृ० ७२४

राजा जगतसिंह, पिता राजा बासू

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार

दूसरे दौर के नवें वर्ष मे जिलहिज्ज के महीने मे पेशावर मे मृत्यु हो गई

ऊदाजीराम दक्खिनी

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार

परसूजी भोंसला

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार

जादोराय दक्खिनी

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार

मगूजी बनालकर[४]

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार

रावतराय दक्खिनी

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार

दत्ताजी दक्खिनी

३००० तीन हजारी– १००० एक हजार सवार

२५०० दो हजार पांच सदी

पृ० ७२५

राजा देवीसिंह, पिता राजा भारत बुन्देला

२५०० दो हजार पांच सदी– २००० दो हजार सवार

पृ० ७२६

२००० दो हजारी

पृथ्वीराज राठौड

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार

राजा राजरुप

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार

---

४ सही शब्द 'निबालकर'

पृ० ७२७

सबलसिंह, पिता राजा सूरजसिंह राठोड़

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

दूसरे दौर के दसवें वर्ष में मृत्यु हो गई.

राय करण भुरटिया

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

राजा जयराम बड़गूजर

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

रूपसिंह, पोता किशनसिंह राठोड़ का

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार.

रामसिंह, पिता करमसी राठोड़

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार.

पृ० ७२८

राजा रामदास नरवरी

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार

वह भी उसी (दूसरे दौर के तीसरे) वर्ष में मर गया.

पीयूजी दक्खिनी

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार

रवीराय दक्खिनी

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार

हाबाजी दक्खिनी

२००० दो हजारी– ८०० आठ सौ सवार.

१५०० एक हजार पांच सदी

राय टोडरमल

१५०० एक हजार पांच सदी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार दो अस्पा तीन अस्पा

पृ० ७२६

रतन राठौड़

१५०० एक हजार पाँच सदी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

रावल पूंजा, जमींदार डूंगरपुर

१५०० एक हजार पाँच सदी– १५०० एक हजार पाँच सौ सवार

पृ० ७३०

अनिरूद्ध, पिता राजा बिट्ठलदास

१५०० एक हजार पाँच सदी– १००० एक हजार सवार.

शिवराम गौड़

१५०० एक हजार पाँच सदी– १००० एक हजार सवार

राव हठीसिंह चन्द्रावत

१५०० एक हजार पाँच सदी– १००० एक हजार सवार

दूसरे दौर के सातवे वर्ष मे दक्षिण मे मृत्यु हो गई.

राव रूपसिंह चन्द्रावत

१५०० एक हजार पाँच सदी– १००० एक हजार सवार

भीम राठौड़

१५०० एक हजार पाँच सदी– १००० एक हजार सवार.

दूसरे दौर के दसवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

पृ० ३३१

हरीसिंह, छोटा भाई[५] राजा सूरजसिंह राठौड़ का

१५०० एक हजार पांच सदी– ६०० नौ सौ सवार.

दूसरे दौर के सातवे वर्ष मे २३ सफर[६] को मृत्यु हो गई.

चन्द्रमन बुन्देला

१५०० एक हजार पाँच सदी– ८०० आठ सौ सवार.

---

५. 'भाई' के स्थान पर 'भतीजा' होना चाहिये.

६. ।रविवार, अप्रेल २१, १६४४ ई

श्यामसिंह, पिता करमसी राठौड़

१५०० एक हजार पांच सदी– ६०० छः सौ सवार.

संग्राम, जमींदार गन्नौर

१५०० एक हजार पांच सदी– ६०० छः सौ सवार.

दूसरे दौर के पांचवें वर्ष में मृत्यु हो गई

रायबा, भाई जादोंराय दक्खिनी

१५०० एक हजार पांच सदी– ६०० छः सौ सवार.

पृ० ७३२

सुजानसिंह सीसोदिया

१५०० एक हजार पांच सदी– ५०० पांच सौ सवार.

१००० एक हजारी

कुंवर रामसिंह, पिता राजा जयसिंह कछवाहा

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

गोपालसिंह, पिता राजा मनरूप कछवाहा

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

राजा बदनसिंह भदोरिया

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

रावल समरसी,[७] जमींदार बांसवाला

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

पृ० ७३३

प्रताप चेरो

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

गिरधरदास गौड़

१००० एक हजारी– ८०० आठ सौ सवार.

---

७. मूल पाठ 'सोसी'.

रायसिंह, पोता राजा गर्जासिह राठौड़ का
१००० एक हजारी– ७०० सात सौ सवार
अर्जुन, पिता राजा बिट्ठलदास
१००० एक हजारी– ७०० सात सौ सवार
रायसिंह झाला
१००० एक हजारी– ७०० सात सौ सवार

पृ० ७३४

राजा अमरसिंह नरवरी
१००० एक हजारी– ६०० छ सौ सवार
महेशदास राठौड
१००० एक हजारी– ६०० छ सौ सवार
रार्जासिह, पिता खीवाँ राठौड
१००० एक हजारी– ६०० छ सौ सवार
दूसरे दौर के चौथे वर्ष मे मृत्यु हो गई
भगवानदास, पिता राजा नरसिंहदेव बुन्देला
१००० एक हजारी– ६०० छ सौ सवार
दूसरे दौर के तीसरे वर्ष मे एक राजपूत के हाथ से मारा गया

पृ० ७३५

किशनसिह भदोरिया
१००० एक हजारी– ६०० छ सौ सवार
दूसरे दौर के सातवें वर्ष मे मृत्यु हो गई
राय तिलोकचन्द कछवाहा
१००० एक हजारी– ५०० पाँच सौ सवार
भोजराज दक्खिनी
१००० एक हजारो– ५०० पाँच सौ सवार.

पृ० ७३६

राजा कुँवरसेन, जमींदार किश्तवार
१००० एक हजारी– ४०० चार सौ सवार.

राजा पृथ्वीचन्द, जमींदार चम्बा

१००० एक हजारी– ४०० चार सो सवार.

राय कासीदास

१००० एक हजारी– २५० दो सौ पचास सवार.

पृ० ७३७

रायरायाँ[८]

१००० एक हजारी– १५० एक सौ पचास सवार.

राय बिहारीमल

१००० एक हजारी– १५० एक सौ पचास सवार.

पृ० ७३८

९०० नौ सदी

राजा मानसिंह गुलेरी

९०० नौ सदी– ८५० आठ सौ पचास सवार.

जगराम कछवाहा

९०० नौ सदी– ६०० छः सौ सवार.

पृ० ७३९

८०० आठ सदी

बरसिंगदास, पिता राजा द्वारकादास

८०० आठ सदी– ८०० आठ सौ पचास सवार.

कृपाराम गौड़

८०० आठ सदी– ७५० सात सौ पचास सवार.

बदनेश कछवाहा

८०० आठ सदी– ६०० छः सौ सवार.

८. यह 'रायरायान' इस नाम से मशहूर था.

पृ० ७४०

लखमीसेन चौहान

८०० आठ सदी– ५०० पांच सौ सवार

इसी (दूसरे) दौर के चौथे वर्ष मे मृत्यु हो गई

गोरधन राठौड

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार

इन्द्रसाल हाडा

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार

नाहर सोलंकी

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार

पृ० ७४१

अजबसिंह, पिता सतरसाल कछवाहा

८०० आठ सदी– ३०० तीन सौ सवार

राना जोधा, जमींदार उमरकोट

८०० आठ सदी– ३०० तीन सौ सवार

इसी (दूसरे) दौर के छठे वर्ष मे मृत्यु हो गई

राय मुकुन्ददास

८०० आठ सदी– १०० एक सौ सवार

७०० सात सदी

पृ० ७४२

भोजराज कछवाहा

७०० सात सदी– ५०० पांच सौ सवार

चन्द्रभान नरूका

७०० सात सदी– ५०० पांच सौ सवार

रावत दयालदास झाला

७०० सात सदी– ५०० पांच सौ सवार

चतुरभुज चौहान

७०० सात सदी– ५०० पांच सौ सवार

जगन्नाथ राठौड़

७०० सात सदी– ४०० चार सौ सवार.

इसी (दूसरे) दौर के तीसरे वर्ष में मृत्यु हो गई.

संग्राम कछवाहा

७०० सात सदी– ४०० चार सौ सवार.

मथुरादास कछवाहा

७०० सात सदी– ४०० चार सौ सवार.

राजा उदयभान

७०० सात सदी– ४०० चार सौ सवार.

पृ० ७४३

नारायणदास सीसोदिया

७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार.

पृ० ७४४

राय सभाचन्द

७०० सात सदी– १०० एक सौ सवार.

पृ० ७४५

६०० छः सदी

प्रतापसिंह चौहान

६०० छः सदी– ५०० पाँच सौ सवार.

उदोत, पिता रायसाल कछवाहा

६०० छः सदी– ४०० चार सौ सवार.

इनकी भी इसी (दौर के पहले) वर्ष में मृत्यु हो गई.

प्रेमचन्द, पोता राव मनोहर का

६०० छः सदी– ४०० चार सौ सवार.

पृ० ७४६

५०० पांच सदो

पृ० ७४७

राजा किशनसिंह तंवर

५०० पाँच सदी– ५०० पाँच सो सवार.

चतुरभुज सोनगरा

५०० पाँच सदी– ५०० पाँच सो सवार.

राजा जगमन जादों

५०० पाँच सदी– ४०० चार सो सवार.

हमीरसिंह सीसोदिया

५०० पाँच सदी– ३०० तीन सो सवार.

बल्लू चौहान

५०० पाँच सदी– ३०० तीन सो सवार.

पृ० ७४८

गोविन्ददास राठौड़

५०० पाँच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

जसवन्त, भाई महेशदास राठौड़

५०० पाँच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

पृथ्वीसिंह, पोता[९] राजा मानसिंह कछवाहा का

५०० पाँच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

किशनसिंह, पोता[१०] राजा मानसिंह कछवाहा का

५०० पाँच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

सकतसिंह चौहान

५०० पाँच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

---

९. 'पोता' के स्थान पर 'पडपोता' होना चाहिए.

१०. 'पोता' के स्थान पर 'पडपोता' होना चाहिये.

पृ० ७४६

बेनीदास, पिता बरसिंगदेव बुन्देला

५०० पांच सदी– २५० दो सौ पचास सवार.

इसी दौर के तीसरे बर्ष मे एक राजपूत के हाथ से मारा गया.

पृ० ७५०

उग्रसेन, पोता राजा मानसिंह कछवाहा का

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

मानसिंह, पिता राजा बिक्रमाजीत

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

मनोहरदास, भाई विट्ठलदास

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

कान्हो, पिता बलभद्र शेखावत

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

पृ० ७५२

केसरीसिंह राठोड़

५०० पांच सदी– १०० एक सौ सवार.

पादशाहनामा

मुहम्मद वारिस कृत (हस्तलिखित)

जिल्द– २

तीसरा दौर जुलूसी
(सन् २१–३०)

६००० छः हजारी

पृ० १६६

महाराजा जसवन्तसिंह

६००० छः हजारी– ६००० छः हजार सवार, ५००० पांच हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

पृ० १६७

५००० पांच हजारी

राजा जयसिंह

५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार, ४००० चार हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

राजा बिट्ठलदास

५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार, २००० दो हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा

तीसरे दौर के पांचवें वर्ष मे १२ जिलहिज[1] की मृत्यु हो गई.

राणा जगतसिंह

५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.

तीसरे दौर के छठे वर्ष में मृत्यु हो गई.

---

१. शनिवार, अक्टूबर १८, १६५१ ई

मिर्जा राजा जयसिंह (आम्बेर)

राना राजसिंह

५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.

मानुजी मोंगला

५००० पांच हजारी– ५००० पांच हजार सवार.

राजा रायसिंह सीसोदिया

५००० पांच हजारी– २५०० दो हजार पांच सौ सवार.

४००० चार हजारी

राव सतरसाल

४००० चार हजारी– ४००० चार हजार सवार.

पृ० १६८

रूपसिंह राठोड़

४००० चार हजारी– ३००० तीन हजार सवार.

राजा पहाड़सिंह बुन्देला

४००० चार हजारी– ३००० तीन हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

तीसरे दौर के आठवें वर्ष के सफर के महीने में सरने ही पहल मृत्यु हो गई.

अनूपसिंह, पिता अमरसिंह, जमींदार बान्धो

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार, १००० एक हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

मुकन्दसिंह हाड़ा

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

रामसिंह, पिता राजा जयसिंह

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

राव करण

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

ऊदाजीराम

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

परसूजी

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

रामसिंह, पिता करमसी राठौड़

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

पृ० २००

मंगूजी

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.
तीसरे दौर के नवें वर्ष में मृत्यु हो गई.

जादोंराय

३००० तीन हजारी– १००० एक हजार सवार, ५०० पांच सौ सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

बीरमदेव सीसोदिया

३००० तीन हजारी– १००० एक हजार सवार.

दत्ताजी

३००० तीन हजारी– १००० एक हजार सवार.

२५०० दो हजार पांच सदी

सबलसिंह सीसोदिया

२५०० दो हजार पांच सदी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

पृ० २०१

२००० दो हजारी

राजा सुजानसिंह बुन्देला

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

राजा टोडरमल

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार, १५०० एक हजार पांच सौ सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

तीसरे दौर के सातवे वर्ष मे मृत्यु हो गई.

गिरधरदास गौड़

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार.

पृथ्वीराज राठौड़

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार.

तीसरे दौर के दसवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

रतन, पिता महेशदास

२००० दो हजारी– १६०० एक हजार छः सौ सवार.

अर्जुन, पिता राजा विट्ठलदास

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

राजा शिवराम

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

राजा जयराम

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

तीसरे दौर के पहले वर्ष मे मृत्यु हो गई.

पृ० २०२

राव रूपसिंह चन्द्रावत

२००० दो हजारी– १२४० एक हजार दो सौ चालीस सवार.
तीसरे दौर के चौथे वर्ष में मृत्यु हो गई.

पीथूजी[2]

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार.

राव अमरसिंह

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार.

सुजानसिंह सीसोदिया

२००० दो हजारी– ८०० आठ सौ सवार.

हाबाजी

२००० दो हजारी– ८०० आठ सौ सवार.

पृ० २०३

१५०० एक हजार पांच सदी

पूरणमल बुन्देला

१५०० एक हजार पाँच सदी– १५०० एक हजार पाँच सौ सवार.

रावल पूँजा

१५०० एक हजार पाँच सदी– १५०० एक हजार पाँच सौ सवार.

राजा वदनसिंह[3] भदोरिया

१५०० एक हजार पाँच सदी– १४०० एक हजार चार सौ सवार.

तीसरे दौर के सातवें वर्ष में मृत्यु हो गई.

चतुरभुज चौहान

१५०० एक हजार पाँच सदी– १५०० एक हजार पाँच सौ सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

---

२ मूल पाठ 'तेनूजो'.
३. मूल पाठ 'वुधसिह'.

रार्यासह, पोता गजसिंह राठौड़ का

१५०० एक हजार पांच सदी– १५०० एक हजार पांच सो सवार.

पृ० २०४

राजा अमरसिंह नरवरी

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

चन्द्रमन बुन्देला

१५०० एक हजार पांच सदी– ८०० आठ सो सवार.

गरीबदास, पिता राणा करण

१५०० एक हजार पांच सदी– ७०० सात सो सवार.

पृ० २०५

रायबा

१५०० एक हजार पांच सदी– ६०० छः सो सवार.

१००० एक हजारी

गोपालसिंह, पिता राजा मनरूप कछवाहा

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

रावल समरसी

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

प्रताप, जमींदार पालामऊ

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

पृ० २०६

वीरसिंह, पिता राजा जयसिंह

१००० एक हजारी– ९०० नव सो सवार.

राजा महासिंह, पिता राजा मदनसिंह

१००० एक हजारी– ८०० आठ सो सवार.

रूपराम कछवाहा

१००० एक हजारी– ८०० आठ सो सवार.

रायसिह झाला

१००० एक हजारी– ७०० सात सौ सवार.

रावल सबलसिह जैसलमेरी

१००० एक हजारी– ७०० सात सौ सवार.

पृ० २०७

सुजानसिह, पिता[४] मोहकमसिह

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

उदयभान, पिता श्यामसिह राठौड़

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

राजा किशनसिह तंवर

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

गोरधनदास राठौड़

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

महेशदास राठौड़

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

भोजराज कछवाहा

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

भोजराज दक्खिनी

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

भीम, पिता राजा बिट्ठलदास

१००० एक हजारी– ४०० चार सौ सवार.

रायरायां[५]

१००० एक हजारी– ४०० चार सौ सवार.

पृ० २०८

राजा कुंवरसेन किश्तवारी

१००० एक हजारी– ४०० चार सौ सवार.

तीसरे दौर के दसवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

---

४. 'पिता' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये.

५. राय रघुनाथ; जुलूसी सन् ३० में यह उपाधि उसे प्रदान की गई थी.

राजा पृथ्वीचन्द, जमींदार चम्बा

१००० एक हजारी– ४०० चार सौ सवार.

राय काशीदास

१००० एक हजारी– २५० दो सौ पचास सवार.

तीसरे दौर के दसवें वर्ष में मृत्यु हो गई

रायरायाँ, दयानतराय नाम से सुज्ञात

१००० एक हजारी– १५० एक सौ पचास सवार.

आठवें वर्ष में मृत्यु हो गई.

राय बिहारीमल

१००० एक हजारी– १५० एक सौ पचास सवार

तीसरे दौर के छठे वर्ष में मृत्यु हो गई.

पृ० २०६

९०० नौ सदी

राजा मानसिंह, पिता राजा राजरूप गुलेरी

९०० नौ सदी– ८५० आठ सौ पचास सवार.

रावत दयालदास झाला

९०० नौ सदी– ५०० पाँच सौ सवार

नाहर, पिता राजसिंह

९०० नौ सदी– ४०० चार सौ सवार.

८०० आठ सदी

राय मकरन्द

८०० आठ सदी– ८०० आठ सौ सवार.

पृ० २१०

बरसिंगदास

८०० आठ सदी– ८०० आठ सौ सवार.

हमीरसिंह[६]

८०० आठ सदी– ८०० आठ सौ सवार.

तीसरे दौर के आठवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

कृपाराम गौड़

८०० आठ सदी– ७५० सात सौ पचास सवार.

उग्रसेन कछवाहा

८०० आठ सदी– ६०० छ सौ सवार

राजा उदयभान

८०० आठ सदी– ५०० पांच सौ सवार

मनोहरदास, भाई राजा विट्ठलदास

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार

पृ० २११

राय तिलोकचन्द

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार

मोहनसिंह, पिता माधोसिंह हाड़ा

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

इन्द्रसाल हाड़ा

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार

तीसरे दौरे के चौथे वर्ष मे मृत्यु हो गई

राजा महासिंह, पिता राजा कुंवरसेन किश्तवारी

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार

अजबसिंह

८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

शेरसिंह, पिता रामसिंह राठौड

८०० आठ सदी– ३०० तीन सौ सवार.

राय मुकन्ददास

८०० आठ सदी– २०० दो सौ सवार.

तीसरे दौर के आठवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

---

६. मूल पाठ 'सुमेरसिंह'.

पृ० २१२

७०० सात सदी

संग्रामसिंह, पोता राजा मानसिंह का

७०० सात सदी– ५०० पांच सो सवार.

चन्द्रभान नरूका

७०० सात सदी– ५०० पांच सो सवार.

पृथ्वीराज चौहान

७०० सात सदी– ४०० चार सो सवार.
तीसरे दौर के दसवें वर्ष में मृत्यु हो गई.

मथुरादास कछवाहा

७०० सात सदी– ४०० चार सो सवार.
तीसरे दौर के दसवें वर्ष में मृत्यु हो गई.

पृ० २१३

पृथ्वीराज भाटी

७०० सात सदी– ३०० तीन सो सवार.

मल्लू चौहान

७०० सात सदी– ३०० तीन सो सवार.

सुन्दरदास सीसोदिया

७०० सात सदी– ३०० तीन सो सवार.

जगतसिंह, पिता पृथ्वीराज राठौड़

७०० सात सदी– ३०० तीन सो सवार.

रावत नारायणदास सीसोदिया

७०० सात सदी– ३०० तीन सो सवार.
तीसरे दौर के तीसरे वर्ष में मृत्यु हो गई.

कर्मसिंह कछवाहा

७०० सात सदी– २५० दो सो पचास सवार.

---

७. 'पोता' के स्थान पर 'पड़पोता' होना चाहिये

पृ० २१४

६०० छ सदी

चतुरभुज सोनगरा
 ६०० छ' सदी– ६०० छ सौ सवार
गिरधरदास, पिता रावल पूंजा
 ६०० छ सदी– ६०० छ सौ सवार
प्रेमचन्द, पोता राय मनोहरदास का
 ६०० छ सदी– ४०० चार सौ सवार
जीवाजी, भतीजा मालूजी दक्खिनी का
 ६०० छ सदी– ४०० चार सौ सवार
परदुमन, भाई राजा बिट्ठलदास
 ६०० छ सदी– ३०० तीन सौ सवार

पृ० २१५

ईश्वरसिंह, पिता अमरसिंह
 ६०० छ सदी– २०० दो सौ सवार
किशोरसिंह, पिता माधोसिंह
 ६०० छ सदी– २०० दो सौ सवार
केसरीसिंह, पिता पृथ्वीराज राठौड
 ६०० छ सदी– २०० दो सौ सवार

पृ० २१६

५०० पांच सदी

राजा अमरसिंह बडगूजर
 ५०० पांच सदी– ५०० पांच सौ सवार
चम्पत बुन्देला
 ५०० पांच सदी– ५०० पांच सौ सवार.

रम्भाजी

५०० पांच सदी– ५०० पांच सो सवार.

धन्नाजी

५०० पांच सदी– ५०० पांच सो सवार.

इन्द्रमन, पिता पहाड़सिंह बुन्देला

५०० पांच सदी– ४०० चार सो सवार

राजा जगमन जादों

५०० पांच सदी– ४०० चार सो सवार

तीसरे दौर के दसवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

भीमराय

५०० पांच सदी– ४०० चार सो सवार

हरजन, पिता गिरधरदास गौड़

पृ० २१७

५०० पांच सदी– ३०० तीन सो सवार

हरीसिंह, पिता चन्द्रभान नरूका

५०० पांच सदी– ३०० तीन सो सवार

जसवन्त, भाई महेशदास राठौड़

५०० पांच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

गोविंददास राठौड़

५०० पांच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

तीसरे दौर के पांचवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

बरसा[१] भाला

५०० पांच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

नारायणदास, जमींदार बड़नगर

५०० पांच सदी– २५० दो सो पचास सवार.

तीसरे दौर के आठवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

१ दूसरा पाठ 'परसा'।

किशनसिंह पोता[९] राजा मानसिंह का
५०० पांच सदी– २५० दो सौ पचास सवार
रायबा, भाई रावत दक्खिनी
५०० पांच सदी– २५० दो सौ पचास सवार
हरचन्द,[१०] पिता राजा बिट्ठलदास
५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार

पृ० २१८

बहादुरसिंह, भाई राजा बिट्ठलदास
५०० पांच सदी– २०० दा सौ सवार
विजयराम, भाई राजा बिट्ठलदास
५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार
मानसिंह, पिता राजा विक्रमाजीत
५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार
सबलसिंह, पिता राजा विक्रमाजीत
५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार
फतेहसिंह, पिता सुजानसिंह सीसोदिया
५०० पांच सदी– २०० दा सौ सवार
फतेहसिंह, भाई अनूपसिंह, जमींदार बाधो
५०० पांच सदी– २०० दा सौ सवार
हुब्बा[११] सीसोदिया
५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार
रामसिंह, भाई पृथ्वीराज राठौड
५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार

---

९ 'पोता' के स्थान पर 'पड़पोता' होना चाहिये
१० मूल पाठ हरजुन
११ हुब्बा' स्पष्टतया राजस्थान म अन्य किसी प्रचलित नाम का ही विकृत स्वरूप जान पड़ता है

मुरारदास गौड़

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार

तीसरे दौर के छठे वर्ष मे मृत्यु हो गई.

उग्रसेन कछवाहा

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार

तीसरे दौर के नवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

पृ० २१९

इन्द्रजी, पिता रणराय (?)

५०० पांच सदी– १५० एक सौ पचास सवार.

रणछोड़, भाई बिट्ठलदास

५०० पांच सदी– १५० एक सौ पचास सवार

जगतसिंह,[१२] पिता राजसिंह राठौड़

५०० पांच सदी– १५० एक सौ पचास सवार.

तीसरे दौर के तीसरे वर्ष मे मृत्यु हो गई

पृ० २२०

राय सभाचन्द

५०० पांच सदी– १०० एक सौ सवार.

तीसरे दौर के दसवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

सुलतान सीसोदिया

५०० पांच सदी– १०० एक सौ सवार.

नीलकण्ठ, रायरायां का भाई

५०० पांच सदी– ९० नब्बे सवार.

---

१२. मूल पाठ 'जयसिंह'.

अामल-इ-सालेह्

मुहम्मद सालेह 'कम्बू' कृत

जिल्द–३

पृ० ४४६

६००० छ हजारी

महाराजा जसवन्तसिंह

६००० छः हजारी– ६००० छः हजार सवार, पाँच हजार दो अस्पा तीन अस्पा.

पृ० ४५०

५००० पांच हजारी

राजा गजसिंह, पिता राजा सूरजसिंह राठौड़

५००० पाँच हजारी–५००० पाँच हजार सवार.

राव रतन हाड़ा

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

पन्द्रहवें वर्ष मे मृत्यु हो गई.

राजा जुभारसिंह, पिता राजा नरसिंहदेव

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

ऊदाजीराम

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

बहादुरजी दक्खिनी, पिता जादोराय

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

महाराजा जसवन्तसिंह (जोधपुर)

(ब्लाक, श्री सुखवीरसिंह गहलोत, जोधपुर के सौजन्य से प्राप्त)

पृ० ४५१

राजा जयसिंह

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार, ४००० चार हजार दो अस्पा तीन अस्पा

राजा विट्ठलदास

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार, २५०० दो हजार पांच सौ सवार दो अस्पा तीन अस्पा

राणा जगतसिंह

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार

मालूजी भोसला

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार

राणा राजसिंह

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार

राजा रायसिंह सीसोदिया

५००० पाँच हजारी– २५०० दो हजार पाँच सौ सवार

पृ० ४५२

४००० चार हजारी

राव सतरसाल हाडा

४००० चार हजारी– ४००० चार हजार सवार.

राव सूर भुरटिया

४००० चार हजारी– ३००० तीन हजार सवार

राजा पहाड़सिंह बुन्देला

४००० चार हजारी– ३००० तीन हजार सवार, ५०० पाँच सौ सवार दो अस्पा तीन अस्पा

पृ० ४५३

रूपसिंह राठौड

४००० चार हजारी– २००० दो हजार सवार

जगदेव राव, भाई जादोंराय दक्खिनी

४००० चार हजारी– ३००० तीन हजार सवार.

हमीरराय दक्खिनी

४००० चार हजारी– २५०० दो हजार पाँच सौ सवार.

३००० तीन हजारी

राजा अनिरुद्ध

३००० तीन हजारी– ३००० तीन हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

पृ० ४५४

माधोसिंह हाड़ा

३००० तीन हजारी– ३००० तीन हजार सवार.

राजा राजरूप

३००० तीन हजारी– २५०० दो हजार पाँच सौ सवार.

अनुपसिंह, पिता अमरसिंह, जमींदार बांधो

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

पृ० ४५५

रामसिंह, पिता जयसिंह

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार

मुकन्दसिंह हाड़ा

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

राव करण

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

ऊदाजीराम[1]

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

---

१. ऊदाजीराम पच हजारी का पुत्र

परसूजी

३००० तीन हजारी– २००० दो हजार सवार.

रामसिंह, पिता करमसी राठौड़

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सो सवार.

मंगूजी

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सो सवार.

राजा अनूपसिंह

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सो सवार.

जादोंराय

३००० तीन हजारी– १५०० एक हजार पांच सो सवार.

राजा मनरूप कछवाहा

३००० तीन हजारी– १००० एक हजार सवार.

वीरमदेव सीसोदिया

३००० तीन हजारी– १००० एक हजार सवार.

दत्ताजी

३००० तीन हजारी– १००० एक हजार सवार.

पृ० ४५७

२५०० दो हजार पांच सदी

सबलसिंह सीसोदिया

२५०० दो हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

२०० दो हजारी

राजा सुजानसिंह बुन्देला

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

राजा टोडरमल

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

राजा देवीसिंह बुन्देला

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार, ५०० पाँच सौ सवार दो अस्पा तीन अस्पा.

पृ० ४५८

गिरधरदास गौड़

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार.

पृथ्वीराज राठौड़

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार.

जुगराज बुन्देला

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार.

रतन, पिता महेशदास

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार.

राव दूदा, पोता राव चान्दा का

२००० दो हजारी– *१५०० एक हजार पाँच सौ सवार.*

अर्जुन, पिता राजा बिट्ठलदास गौड़

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पांच सौ सवार.

राजा शिवराम गौड़

२००० दो हजारी–१५०० एक हजार पाँच सौ सवार.

पृ० ४५९

राजा जयराम

२००० दो हजारी– १५०० एक हजार पाँच सौ सवार.

बिहारीदास कछवाहा

२००० दो हजारी– १२०० एक हजार दो सौ सवार.

राव रूपसिंह चन्द्रावत

२००० दो हजारी–१२०० एक हजार दो सौ सवा र

पृ० ४६०

राव ग्रमरसिंह

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार.

पीयूजी

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार

सुजानसिंह सीसोदिया

२००० दो हजारी– ८०० ग्राठ सो सवार.

हावाजी

२००० दो हजारी– ८०० ग्राठ सो सवार.

१५०० एक हजार पांच सदी

पृ० ४६१

पूरणमल बुन्देला

१५०० एक हजार पांच सदी– १५०० एक हजार पांच सो सवार.

रावल पूंजा

१५०० एक हजार पांच सदी– १५०० एक हजार पांच सो सवार.

राजा बदनसिंह भदोरिया

१५०० एक हजार पांच सदी– १४०० एक हजार चार सो सवार.

चतुरभुज चौहान

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार दो ग्रस्पा तीन ग्रस्पा

रायसिंह, पोता राजा गजसिंह का

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

पृ० ४६२

हरदेराम कछवाहा

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

सतरसाल कछवाहा

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

राजा द्वारकादास

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

राजा प्रतापसिंह

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

राजा अमरसिंह नरवरी

१५०० एक हजार पांच सदी– १००० एक हजार सवार.

करमसी राठौड़

१५०० एक हजार पांच सदी– ८०० आठ सौ सवार.

चन्द्रमन बुन्देला

१५०० एक हजार पांच सदी– ८०० आठ सौ सवार.

पृ० ४६३

गरीबदास, पिता राणा करण

१५०० एक हजार पांच सदी– ७०० सात सौ सवार.

जगमाल, पिता किशनसिंह राठौड़

१५०० एक हजार पांच सदी– ६०० छः सौ सवार

श्यामसिंह, पिता करमसी राठौड़

१५०० एक हजार पांच सदी– ६०० छः सौ सवार.

राव रायबा

१५०० एक हजार पांच सदी– ५०० पांच सौ सवार.

अग्नीराय[2]

१५०० एक हजार पांच सदी– ५०० पांच सौ सवार.

पृ० ४६४

गिरधर[3]

१५०० एक हजार पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

---

२ राजा अनूपसिंह बडगूजर की ही उपाधि थी. पा. ना. (१-ब, पृ. ३०३) का अनुसरण कर यहाँ भी इस उल्लेख को दोहरा दिया गया है.

३. मूल पाठ 'गिरधरदेव'.

१००० एक हजारी

ालसिंह, पिता राजा मनरूप

१००० एक हजारी– १००० एक हजार

वल समरसी

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

ताप, जमींदार पालामऊ

१००० एक हजारी– १००० एक हजार सवार.

पृ० ४६५

कीरतसिंह, पिता राजा जयसिंह

१००० एक हजारी– ९०० नो सौ सवार.

राजा महासिंह, पिता राजा वदनसिंह

१००० एक हजारी– ८०० आठ सौ सवार.

जगराम कछवाहा

१००० एक हजारी– ७०० सात सौ सवार.

पृ० १

रायसिंह झाला

१००० एक हजारी– ७०० सात सौ सवार.

राव सबलसिंह जैसलमेरी

१००० एक हजारी– ७०० सात सौ सवार.

बलभद्र शेखावत

१००० एक हजारी– ६०० छः सौ सवार

राजा वीरनारायण[४] बड़गूजर

१००० एक हजारी– ६०० छः सौ सवार.

रूपचन्द गुलेरी

१००० एक हजारी– ६०० छः सौ सवार.

---

४ मूल पाठ 'हरनारायण'.

जैतसिंह[५] राठौड़

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

चतुरसेन, भतीजा श्यामसिंह का

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

पृ० ४६७

सुजानसिंह, पिता[६] मोहकमसिंह

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

उदयभान, पिता रामसिंह[७]

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

राजा किशनसिंह गौड़[८]

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

गोरधनदास राठौड़

१०० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

महेशदास राठौड़

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

पृ० ४६८

भोजराज दक्खिनी

१००० एक हजारी– ५०० पांच सौ सवार.

भीम, पिता राजा विट्ठलदास

१००० एक हजारी– ४०० चार सौ सवार.

रायरायाँ ऊर्फ राय रघुनाथ

१००० एक हजारी– ४०० चार सौ सवार.

---

५. मूल पाठ 'जगतसिंह'

६ 'पिता' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये

७ रामसिंह' के स्थान पर 'श्यामसिंह' होना चाहिये.

८ गोड' के स्थान पर 'तँवर' होना चाहिये.

राजा कुंवरसेन किश्तवारी

१००० एक हजारी– ४०० चार सो सवार.

राय काशीदास

१००० एक हजारी– २०० दो सो सवार.

राय मानीदास[९]

१००० एक हजारी– २०० दो सो सवार.

राय बिहारीमल

१००० एक हजारी– १०० एक सो सवार

पृ० ४७०

राय बनवालीदास[१०]

१००० एक हजारी–१०० एक सो सवार

९०० नो सदी

राजा मानसिंह, पिता राजा रूपचन्द गुलेरी

९०० नो सदी– ८५० आठ सो पचास सवार.

राव दयालदास झाला

९०० नो सदी– ५०० पांच सो सवार.

राय हरचन्द कछवाहा

९०० नो सदी– ४०० चार सो सवार.

माहरु, पिता जयसिंह[११]

९०० नो सदी– ४०० चार सो सवार.

पृ० ४७१

रायरायां, दयानतराय के नाम से सुज्ञात

९०० नो सदी– १५० एक सो पचास सवार.

---

९. मूल पाठ 'मुकुन्ददास'.

१०. मूल पाठ 'बनवारीदास'.

११. सही उल्लेख 'नाहर, पिता राजसिंह' है.

८०० आठ सदी

* राय मकरन्द

    ८०० आठ सदी– ८०० आठ सौ सवार.

कृपाराम गौड़

    ८०० आठ सदी– ८०० आठ सौ सवार

वरसिंहदास[१२]

    ८०० आठ सदी– ८०० आठ सौ सवार.

हमीरसिंह

    ८०० आठ सदी– ८०० आठ सौ सवार,

पृ० ४७२

उग्रसेन कछवाहा

    ८०० आठ सदी– ६०० छः सौ सवार

राजा उदयभान

    ८०० आठ सदी– ५०० पाँच सौ सवार.

राय जगन्नाथ राठौड़

    ८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

राजा उदयसिंह, पिता राजा श्यामसिंह तवर

    ८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

पृ० ४७३

मनोहरदास, भतीजा[१३] राजा बिट्ठलदास

    ८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

राय तिलोकचन्द

    ८०० आठ सदी– ४०० चार सौ सवार.

---

१२. मूल पाठ 'बीरसिंहदास'.

१३. 'भतीजा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये.

मोहनसिंह, पिता मालोसिंह[१४] हाड़ा
८०० आठ सदी– ४०० चार सो सवार.

इन्द्रसाल हाड़ा
८०० आठ सदी– ४०० चार सो सवार.

राजा महासिंह, पिता राजा कुंवरसेन
८०० आठ सदी– ४०० चार सो सवार.

अजबसिंह
८०० आठ सदी–४०० चार सो सवार. पृ० ४७४

शेरसिंह,[१५] पिता रामसिंह राठोड़
८०० आठ सदी– ३०० तीन सो सवार.

फतेहसिंह सीसोदिया
८०० आठ सदी– २०० दो सो सवार.

राय मुकुन्ददास
८०० आठ सदी– १५० एक सो पचास सवार. पृ० ४७५

७०० सात सदी

श्याम, भतीजा राजा मानसिंह[१६]
७०० सात सदी–५०० पांच सो सवार.

चन्द्रभान नरूका
७०० सात सदी– ५०० पांच सो सवार.

---

१४. 'मालोसिंह' के स्थान पर 'माधोसिंह' होना चाहिये.

१५. मूल पाठ 'सवलसिंह'.

१६. सही उल्लेख 'सग्राम, पड़पोता राजा मानसिंह का' है.

पृ० ४७६

सारंगधर, पोता राजा संग्राम का

७०० सात सदी– ५०० पांच सवार.

पृथ्वीराज चौहान

७०० सात सदी– ४०० चार सौ सवार.

मथुरादास कछवाहा

७०० सात सदी– ४०० चार सौ सवार.

पृथ्वीराज भाटी

७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार.

बल्लू चौहान

७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार.

सुन्दरदास सीसोदिया

७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार.

जगतसिंह राठौड़

७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार.

पृ० ४७७

रावत नारायणदास सीसोदिया

७०० सात सदी– ३०० तीन सौ सवार.

फतेहसिंह कछवाहा

७०० सात सदी– २०० दो सौ सवार

बाला, पिता जगन्नाथ कछवाहा

७०० सात सदी- २०० दो सौ सवार

पृ० ४७८

६०० छः सदी

चतुरभुज सोनगरा ,

६०० छः सदी– ६०० छ सौ सवार

पृ० ४७६

गिरधरदास, पिता रावल पूंजा

६०० छः सदी– ६०० छः सौ सवार.

प्रेमचन्द, पोता राय मनोहर का

६०० छः सदी– ४०० चार सौ सवार.

जीवाजी, भाई[१७] मालूजी दक्खिनी

६०० छः सदी– ४०० चार सौ सवार.

परदुमन,[१८] भतीजा[१९] विट्ठलदास का

६०० छः सदी– ३०० तीन सौ सवार.

पृ० ४८०

ईश्वरसिंह, पिता अमरसिंह

६०० छः सदी– २०० दो सौ सवार.

किशोरसिंह,[२०] पिता माधोसिंह

६०० छः सदी– २०० दो सौ सवार

केसरीसिंह, पिता पृथ्वीराज

६०० छः सदी– २०० दो सौ सवार.

मुकुन्ददास राठोड़

६०० छः सदी– १५० एक सौ पचास सवार.

पृ० ४८१

५०० पांच सदी

राजा अमरसिंह बड़गूजर

५०० पांच सदी– ५०० पांच सौ सवार.

---

१७ 'भाई' के स्थान पर 'भतीजा' होना चाहिये.

१८. मूल पाठ 'सरघुन'.

१९. 'भतीजा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये.

२०. मूल पाठ 'कपूरसिंह'.

चम्पत बुन्देला

५०० पाँच सदी– ५०० पाँच सौ सवार

रम्भाजी

५०० पाँच सदी– ५०० पाँच सौ सवार.

धन्नाजी

५०० पाँच सदी– ५०० पाच सौ सवार

इन्द्रमन, पिता पहाड़सिंह

५०० पाँच सदी– ४०० चार सौ सवार.

हरीसिंह, पिता राव चान्दा

५०० पाँच सदी– ४०० चार सौ सवार.

राजा जगमन जादो

५०० पाँच सदी– ४०० चार सौ सवार

हनुमतराय

५०० पाँच सदी– ४०० चार सौ सवार

हमीरराय

५०० पाँच सदी– ४०० चार सौ सवार

दलपत[२१] राठौड़

५०० पाँच सदी– ३०० तीन सौ सवार

राजा उदयसिंह, पिता राजा भान

५०० पाँच सदी– ३०० तीन सौ सवार.

हरजस, पिता गिरधर तवर[२२]

५०० पाँच सदी– ३०० तीन सौ सवार.

हरीसिंह, पिता चन्द्रभान

५०० पाँच सदी– ३०० तीन सौ सवार

---

२१. मूल पाठ 'दिलीप'.

२२. सही उल्लेख 'हरजन, पिता गिरधर गोड' है.

पृ० ४८३

माधोसिंह सीसोदिया
५०० पांच सदी– २५० दो सौ पचास सवार.
जसवन्त, भाई महेशदास राठौड़
५०० पांच सदी– २५० दो सौ पचास सवार
गोविन्ददास राठौड़
५०० पांच सदी–२५० दो सौ पचास सवार
बरसा[२३] झाला
५०० पांच सदी– २५० दो सौ पचास सवार
त्तम (नारायण) जमींदार
५०० पांच सदी– २५० दो सौ पचास सवार
किशनसिंह,[२४] पोता[२५] मानसिंह का
५०० पांच सदी– २५० दा सौ पचास सवार.
रायवा,[२६] भाई रावत दक्खिनी
५०० पांच सदी– २५० दो सौ पचास सवार

पृ० ४८४

नरहरदास, पिता[२७] बेनीदास
५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.
हरदास झाला
५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.
हरचन्द, पिता राजा बिठ्ठलदास
५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

---

२३ मूल पाठ 'नरपत'.
२४. मूल पाठ 'विशनसिंह'.
२५. 'पोता' के स्थान पर 'पड़पोता' होना चाहिये.
२६. मूल पाठ 'राना'
२७ 'पिता' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये.

बहादुरसिह,[28] भाई बिट्ठलदास

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

मानसिह, पिता राजा विक्रमाजीत

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

विजयराम, भतीजा[29] राजा बिट्ठलदास का

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

सबलसिह, पिता विक्रमाजीत

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार

फतेहसिह, पिता सुजानसिह सीसोदिया

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

फतेहसिह, भाई रूपसिह[30]

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

उग्रसेन कछवाहा

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार

चम्पत[31] सीसोदिया

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार

रामसिह, भाई पृथ्वीराज

५०० पांच सदी- २०० दो सौ सवार.

मुरारदास गौड़

५०० पांच सदी–२०० दो सौ सवार

नरहरदास झाला

५०० पांच सदी– २०० दो सौ सवार.

---

२८ मूल पाठ 'बहारसिह'.

२६. 'भतीजा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये.

३०. 'रूपसिह' के स्थान पर 'अनूपसिह' होना चाहिये.

३१. वारिस० (२, पृ० २१८) की सूची मे उल्लिखित 'हुब्बा' और यह 'चम्पत' सम्भवत एक ही व्यक्ति है। सही नाम निर्धारण के लिए कोई प्रामाणिक आधार प्राप्य नही है.

मुकुन्ददास, पिता राजा गोपालदास

५०० पांच सदी– १५० एक सौ पचास सवार

रणछोड़, भतीजा[३२] बिट्ठलदास का

५०० पांच सदी– १५० एक सौ पचास सवार.

पृ० ४८६

जगतसिंह,[३३] पिता राजसिंह राठौड़

५०० पांच सदी– १५० एक सौ पचास सवार.

पृ० ४८७

राय सभाचन्द

५०० पांच सदी– १०० एक सौ सवार.

सुलतानसिंह सीसोदिया

५०० पांच सदी– १०० एक सौ सवार.

नीलकण्ठ, रायरायां का भाई

५०० पांच सदी– ८० अस्सी सवार.

---

३२. 'भतीजा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये.

३३. मूल पाठ 'अभयसिंह'.

परिशिष्ट–१

शाहजहाँ के कुछ प्रमुख मनसबदार जिनके नाम लाहोरी०, वारिस० और कम्बू० की सूचियों में नहीं हैं—

जादोराय दक्खिनी[1]

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

खिलोजी भोंसला[2]

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

शहाजी भोंसला[3]

५००० पाँच हजारी– ५००० पाँच हजार सवार.

---

१ सिंदखेड के जादव *विठोजी का पुत्र लखोजी जो जादोराय नाम* से सुज्ञात हुआ. निजामशाही राज्य की दक्षिणी सेना के इस सुप्रतिष्ठित सरदार ने जहाँगीर के शासन-काल के १६ वें वर्ष (सन् १६२२ ई०) में दक्षिण मे शाहजादा खुर्रम के पास उपस्थित हो शाही सेवा स्वीकार कर ली थी. परन्तु १६३० ई० मे जब वह शाही सेवा छोड कर पुन निजाम की सेवा मे उपस्थित हुआ तब दौलताबाद मे अपने दो पुत्र और एक पौत्र सहित वह धोखे से मारा गया. हिस्टारिकल०, पृ० ४७, मा० उ० (हि०), १, पृ० १७६, देवी० शाह०, १, पृ० ११.

२ विठोजी भोसला का पुत्र और मालोजी भोसला का भाई. शाहजहाँ के शासन काल के प्रथम वर्ष मे निजाम का यह दक्षिणी सरदार महाबत खाँ खानखाना के पुत्र खानजमाँ की सहायता से शाही मनसबदार बन गया था. परन्तु सन् १६३३ ई० मे दौलताबाद के युद्ध के समय शाही सेवा छोड कर वह पुन निजाम के साथ जा मिला. देवी० शाह०, १, पृ १७, ६६, मा० उ० (हि०), १, पृ० ३०४-३०५, शिव चरित्र०, पृ १०७, १५३

३. सतारा राजघराने के पूर्वज बाबाजी राज भोंसला के पुत्र मालोजी भोसला का ज्येष्ठ पुत्र और सुप्रसिद्ध छत्रपति शिवाजी का पिता वह निजाम की हिन्दू सेना का सेनानायक था अपने श्वसुर जादोराय के मारे जाने पर उसने निजाम की सेवा छोड दी और आजम खाँ की सहायता से सन् १६३० ई० मे उसे पाँच हजारी मनसब के शाही मनसबदार के साथ ही जुनेर और सगमनेर की जागीरी भी दी गई, जो

मीनाजी भोंसला[४]

३००० तीन हजार– १५०० एक हजार पाँच सौ सवार.

शभाजी भोसला[५]

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार

तानाजी दक्खिनी[६]

२००० दो हजारी– २००० दो हजार सवार.

कल्याण, रावल[७] (जैसलमेर)

२००० दो हजारी– १००० एक हजार सवार

पहिले फतेह खाँ के अधिकार में थी मई १६३२ ई० मे यह जागीरी पुन फतेह खाँ को दे दी जाने पर नाराज हो वह शाही सेवा छोड कर आदिल खाँ के पास चला गया और तब निरन्तर मुगलो के विरुद्ध संघर्ष करता रहा देवी० शाह०, १, पृ० ४१, ४२, ७१, ६४-६५, १०६-१०८, ११७-११८, १७७ १७८, हिस्टारिकल०, पृ० ११०, शिवाजी० पृ ३१ ३२

४ शहाजी भोसला के साथ उसने भी सन् १६३० ई० मे शाही सेवा स्वीकार की थी संभवत वह त्रिठोजी भोसले का पुत्र मबाजी हो देवी० शाह०, १, पृ ४१-४२, शिवाजी०, पृ० ३१ हिस्टारिकल० पृ० ११०

५ सतारा राजघराने के पूर्वज शहाजी भोसला का बडा पुत्र जो अपने पिता के साथ ही सन् १६३० ई० मे शाही मनसबदार बना था. देवी० शाह०, १, पृ० ४२, हिस्टारिकल०, पृ० ११०

६ वह सोमवार, नवम्बर ६, १६३५ ई० मे शाही मनसबदार बना था उसके बारे म और कोई विशेष जानकारी प्राप्त नही है.

७ जैसलमेर के रावल हरराज का पुत्र और रावल भीम का छोटा भाई रावल भीम के निसंतान मरने पर जहाँगीर ने सन् १६१६ ई० मे उसके छोटे भाई कल्याण को रावल की पदवी और दो हजारी जात–एक हजार सवार का मनसब प्रदान किया नैणसी०, २, पृ० ३४२, त्र॰ जहाँ०, पृ० ३६१, ३६३-३६४, देवी० शाह०, १, पृ० १२

यशवंतराव दखिनी[8]

२००० दो हजारी– १००० हजार सवार.

भोजबल[9]

१००० एक हजारी– ८०० आठ सौ सवार.

---

८. शाहजहाँ के सिंहासनारूढ़ होने के समय उसका मनसब दो हजारी– एक हजार सवार का था. मार्च ३०, १६३१ ई० को उसे अहदियों की बख्शीगिरी दी गई थी. साथ ही उसने कई युद्धों में भाग लिया था. देखी० शाह०, १, पृ० ११, ५०, ६६.

९. धोडप का किलेदार. अलावर्दी खाँ द्वारा घेरे जाने पर जून १६, १६३६ ई० को आत्म समर्पण कर वह मुगल मनसबदार बन गया. यदुनाथ सरकार ने (औरंग० १, पृ० ३९) इसे भ्रमवश औसा का किलेदार लिख दिया है. देखी० शाह०, १, पृ० १८९, शिव चरित्र०, पृ० १८०.

परिशिष्ट—२

शाहजहां के कुछ निम्नतर स्तरीय हिन्दू मनसबदार

[लाहोरी०, वारिस० और कम्बू० मे पाँच सदी तक के मनसबदारो की ही सूचियां दी गई हैं। लेकिन कुछ अन्य समकालीन अथवा प्रामाणिक ग्रंथो मे पाँच सदी से भी निम्नतर श्रेणीय कई एक मनसबदारो के नामो, उनके मनसबो आदि का यत्र-तत्र उल्लेख मिलता है। सशोधको आदि की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए उन्हें भी यहां सकलित कर दिया गया है। पाँच सदी या उससे अधिक मनसब वाले जिन-जिन मनसबदारो के नाम फारसी आधार ग्रंथों की सूचियों मे पहिले सकलित किये जा चुके है, उनको यहां दोहराना निरर्थक जान कर छोड दिया गया है—मनोहरसिंह]

१. जोधपुर हुकूमत की बही (बही०)

पृ० १०

रायसिंह सीसोदिया, राजा (के आधीन)

उदयभाण गौड़

४०० चार सदी— २०० दो सो सवार.

हरीभाण गौड़

३०० तीन सदी— १०० एक सो सवार

मुकुन्दसिंह हाड़ा (के आधीन)

जुझारसिंह हाड़ा[1]

४०० चार सदी— १०० एक सो सवार,

कन्हीराम हाड़ा[2]

३०० तीन सदी— ६० साठ सवार.

---

१. कोटा राज्य के सस्थापक माधोसिंह हाडा का तृतीय पुत्र धरमाट के युद्ध मे काम आया कोटा०, १, पृ० १३४.

२ कोटा राज्य के सस्थापक माधोसिंह हाडा का चौथा पुत्र धरमाट के युद्ध में काम आया. कोटा०, १, पृ० १३४.

फतेहसिंह हाड़ा[३]

२०० दो सदी– ४० चालीस सवार.

सुजाणसिंह बुंदेला, राजा (के आधीन)

जगदेव, पिता नरहरदास[४]

४०० चार सदी– १०० एक सौ सवार.

हीरामणि गौड़, कृपाराम गौड़ के काका का पुत्र

२०० दो सदी– ४० चालीस सवार.

परसराम गौड़

१०० एक सदी– ३५ पैंतीस सवार.

चुतरग बुन्देला, पिता चन्द्रमण[५]

२०० दो सदी– १०० एक सौ सवार

परबतसिंह, पिता चन्द्रमण[५]

१५० डेढ सदी– ५० पचास सवार

शिवराम गौड़, राजा (के आधीन)

सदाराम गौड़

४०० चार सदी– १५० एक सौ पचास सवार.

सूरजमल, पिता शिवराम गौड

३०० तीन सदी– १०० एक सौ सवार.

---

३. सभवत सुप्रसिद्ध राव रतन हाडा के चौथे पुत्र जगन्नाथ का द्वितीय पुत्र वश०, ३, पृ० २४५६

४. ओरछा के सुविख्यात शासक वीरसिंहदेव बुन्देला के पुत्र नरहरदास का लडका. बुन्देल०, पृ० १४०

५ ये दोनो ओरछा के राजा बीरसिंहदेव बुन्देला के पौत्र और चन्द्रमण के पुत्र वशावली० मे उनके नाम नही दिये गये हैं

पृ० १२

रतनसिंह राठौड़, पिता महेशदास (के आधीन)

फतेहसिंह, पिता महेशदास[6]

२५० ढाई सदी–

अर्जुन गौड़ (के आधीन)

सूरसिंह गौड़

२०० दो सदी– ३० तीस सवार

अमरसिंह चन्द्रावत (के आधीन)

सुजाणसिंह चन्द्रावत, पिता बिट्ठलदास[7]

३०० तीन सदी– १०० एक सौ सवार.

कल्याणसिंह, पिता बिट्ठलदास[7]

२०० दो सदी– ४५ पैंतालीस सवार.

सुजाणसिंह सीसोदिया (के आधीन)

दौलतसिंह, पिता सुजाणसिंह[8]

३०० तीन सदी–

पृ० १३

अमरसिंह नरवरी, राजा (के आधीन)

जगतसिंह, पिता राजा अमरसिंह

२०० दो सदी– ६० साठ सवार.

---

६ मोटा राजा उदयसिंह के पौत्र महेशदास का छोटा पुत्र और रतनसिंह राठोड़ का छोटा भाई धरमाट के युद्ध में काम आया. ख्यात० (१ पृ० २०७) में उसका मनसब १५० डेढ़ सदी-३० सवार होने का उल्लेख है रतलाम०, पृ० ४६-४७

७ ये दोनों रामपुरा के राव चांदा अथवा चन्द्रभाण के छोटे पुत्र बिट्ठलदास के पुत्र. रामपुरा की ख्यात, (हस्तलिखित), पृ० २०.

८ शाहपुरा राज्य के संस्थापक सुजाणसिंह सीसोदिया का छोटा पुत्र शाहपुरा का शासक (सन् १६६४-१६८५ ई०). शाहपुरा राज्य की ख्यात, (हस्तलिखित), १, पृ० ३१, ४१-४२, ५०-५४.

महेशदास राठौड़, पिता सूरजमल (के आधीन)

जुझारसिंह, पिता महेशदास राठौड़[९]

२०० दो सदी– २५ पचीस सवार.

गोरधन चांदावत राठौड़ (के आधीन)

रूपसिंह राठौड़, पिता गोरधन

४०० चार सदी– ५० पचास सवार

रतनसिंह राठौड़, पिता गोरधन[१०]

२०० दो सदी– २५ पचीस सवार.

पृ० १४

दयालदास झाला (के आधीन)

राघोदास झाला[११]

५०० पाँच सदी– २५० दो सौ पचास सवार.

इन्द्रभाण झाला

३०० तीन सदी– ३०० तीन सौ सवार.

जगन्नाथ झाला, पिता नरहरदास

२०० दो सदी–

उदयभाण, पिता जगन्नाथ झाला

२०० दो सदी– ३० तीस सवार.

बरसिहदेव, पिता द्वारकादास (के आधीन)

विजयसिंह, पिता द्वारकादास[१२]

३०० तीन सदी–

---

९. सूरजमल चांपावत के पुत्र महेशदास का लडका ख्यात०, १, पृ० २५३.

१० चण्डावल के स्वामी गोरधन चांदावत का पुत्र. धरमाट के युद्ध से वह भाग निकला था कूंपावत०, पृ० ७०३ ७०४ पा० टि०

११ वही० (पृ० २५) के अनुसार नरहरदास झाला का पुत्र और दयालदास का छोटा भाई ख्यात० (१, पृ० २०७) के अनुसार उसका मनसब ४०० चार सदी–२५० दो सौ पचास सवार था जो अधिक सही है, क्योंकि उसका नाम वारिस० और कम्बू० में नहीं है

१२ यह विजयसिंह राजा द्वारकादास गिरधरदासोत का पुत्र नहीं है, क्योंकि *नैणसी० (२, पृ० ३५) के अनुसार द्वारकादास के एक मात्र पुत्र वरसिंह-देव ही था.*

जयचन्द पिता, दलपत
५०० पांच सदी– २५० दो सौ पचास सवार
श्यामचन्द, पिता बलभद्र
२०० दो सदी– ४० चालीस सवार
अभयचन्द, पिता भवनचन्द
१०० एक सदी– २० बीस सवार
अखैचन्द, पिता भवनचन्द
१०० एक सदी– १५ पन्द्रह सवार
प्रतापसिंह चौहान
४०० चार सदी– ३०० तीन सौ सवार पृ० १५

बल्लू चौहान, पिता सावन्तसिंह (के आधीन)
तुलसीदास चौहान, पिता बल्लू[१३]
३०० तीन सदी– ६० साठ सवार
नरहरदास, पिता बल्लू चौहान[१४]
२०० दो सदी– ३० तीस सवार
गोविन्ददास चौहान, पिता अचलदास[१५]
१०० एक सदी– १५ पन्द्रह सवार. पृ० १६

रामसिंह, पिता बल्लू राठौड (के आधीन)
उदयसिंह, पिता रामसिंह राठौड[१६]
. १०० एक सदी– ३० तीस सवार

---

१३ नैणसी० में इसका नाम नहीं है
१४ वह धरमाट के युद्ध मे शाही सेना के साथ था, बाद मे शामूगढ के
युद्ध मे काम आया नैणसी०, १, पृ० १७६-१७७
१५ नैणसी०, १, पृ० १७६ उसका पुत्र दूदा तब महाराजा जसवन्तसिंह की
सेना के साथ था, और धरमाट के युद्ध मे काम आया ख्यात०,
१ पृ० २१५
१६ रामसिंह बलुओत भारमलोत राठोड का पुत्र वह धरमाट के युद्ध मे
मारा गया था ख्यात०, १, पृ० ७०८

रुक्मांगद चौहान, पिता पृथ्वीराज

५०० पाँच सदी– २०० दो सौ सवार.

हरीसिंह, रावत–जमींदर देवलिया[१७]

४०० चार सदी– ४०० चार सौ सवार.

माधोसिंह चन्द्रावत

४०० चार सदी– २०० दो सौ सवार.

पृ० १७

कल्याणदास, पिता महेशदास राठौड़[१८]

४०० चार सदी– ४०० चार सौ सवार.

महासिंह, पिता केशोदास[१९]

४०० चार सदी– २०० दो सौ सवार

पृथ्वीसिंह, पिता जुझारसिंह कछवाहा[२०]

४०० चार सदी– ४०० चार सौ सवार

---

१७ वर्तमान प्रतापगढ (देवलिया) राजघराने का पूर्वज. देवलिया (प्रतापगढ) का शासक (सन् १६२८-१६७३ ई०), ओझा०, प्रतापगढ राज्य का इतिहास, पृ० १४१-१६४

१८ मोटा राजा उदयसिंह के पौत्र महेशदास का छोटा पुत्र और रतलाम के रतनसिंह राठौड का छोटा भाई रतलाम०, पृ० ४४-४५

१९ सुज्ञात राठौड केशवदास मारू का पौत्र झाबुआ राज्य और नगर का संस्थापक तथा झाबुआ राज्य का शासक (लगभग १६३०-१६७७ ई०). कविराजा०, २, पृ० २१६, वाकीदास०, पृ० ५८ क्र० ६४०, ६४७, शोधपत्रिका०, वर्ष १२–अंक ३ पृ०१४, झाबुआ स्टेट गेजेटियर, पृ० ३ (१९०८ ई०), झाबुआ राजघराने के निजी संग्रह में प्राप्य रामगड-घुलेट परगने सबधी सन् १०७२ हि० (१६६१-६२ ई०)का महजरनामा (श्री रघुबीर लायब्रेरी, सीतामऊ, मे प्राप्य हिन्दी अनुवाद)

२०. पा०ना० (२, पृ० ७४८) के अनुसार जून १६४७ ई०तक उसका मनसब ५०० पाँच सदी–२५० दो सौ पचास सवार था. सभवत उसके बाद कभी उसका जात मनसब घटा दिया गया होगा क्योंकि वारिस० की सूची मे उसका नाम नही है. उसके बारे मे टिप्पणियों के अन्तर्गत देखो.

मंर्मसिह, पिता मानसिह सीसोदिया[२१]

४०० चार सदी– १५० एक सौ पचास सवार.

२. जोधपुर राज्य की ख्यात

पृ० २०८

किशनसिह सीसोदिया नारायणदास शक्तावत[२२]

४०० चार सदी– १५० एक सौ पचास सवार.

रुक्मांगद सीसोदिया सुरताण अचलावत[२३]

२०० दो सदी– ३० तीस सवार.

---

२१ उसके ठीक नाम का पता नहीं लगता. नैणसी० में उसका नाम नहीं दिया गया है. उसका पिता सीसोदिया मानसिह, भाण शक्तावत का तीसरा पुत्र था. नैणसी०, १, पृ० ६६.

२२. महाराणा उदयसिंह के पुत्र शक्तिसिह के द्वितीय पुत्र अचलदास का पौत्र और शाही मनसबदार नारायणदास का ज्येष्ठ पुत्र. नैणसी०, १, पृ० ६७; देखो टिप्पणि "नारायणदास".

२३ देखो टिप्पणि "सुलतान सीसोदिया".

परिशिष्ट–३

शाहजहाँ के जुलूसी सन

शाहजहाँ का प्रत्येक जुलूसी सन् जमादिउस्-सानी १ से प्रारम्भ होता था

पहला दौर

पहला वर्ष – जनवरी २८, १६२८ ई० से
दूसरा वर्ष – जनवरी १७, १६२६ ई० से
तीसरा वर्ष – जनवरी ६, १६३० ई० से
चौथा वर्ष – दिसम्बर २६, १६३० ई० से
पाँचवाँ वर्ष – दिसम्बर १५, १६३१ ई० से
छठा वर्ष – दिसम्बर ४, १६३२ ई० से
सातवाँ वर्ष – नवम्बर २३, १६३३ ई० से
आठवाँ वर्ष – नवम्बर १३, १६३४ ई० से
नवाँ वर्ष – नवम्बर २, १६३५ ई० से
दसवाँ वर्ष – अक्तूबर २१, १६३६ ई० से

दूसरा दौर—

पहला वर्ष – अक्तूबर १०, १६३७ ई० से
दूसरा वर्ष – सितम्बर २६, १६३८ ई० से
तीसरा वर्ष – सितम्बर १६, १६३६ ई० से
चौथा वर्ष – सितम्बर ८, १६४० ई० से
पाँचवाँ वर्ष – अगस्त २८, १६४१ ई० से
छठा वर्ष – अगस्त १८, १६४२ ई० से
सातवाँ वर्ष – अगस्त ७, १६४३ ई० से
आठवाँ वर्ष – जुलाई २६, १६४४ ई० से
नवाँ वर्ष – जुलाई १५, १६४५ ई० से
दसवाँ वर्ष – जुलाई ५, १६४६ ई० से

तीसरा दौर—

पहला वर्ष – जून २४, १६४७ ई० से
दूसरा वर्ष – जून १३, १६४८ ई० से
तीसरा वर्ष – जून २, १६४६ ई० से
चौथा वर्ष – मई २२, १६५० ई० से
पाँचवां वर्ष – मई १२, १६५१ ई० से
छठा वर्ष – अप्रेल ३०, १६५२ ई० से
सातवां वर्ष – अप्रेल १६, १६५३ ई० से
आठवां वर्ष – अप्रेल ६, १६५४ ई० से
नवां वर्ष – मार्च ३०, १६५५ ई० से
दसवां वर्ष – मार्च १८, १६५६ ई० से

इकतीसवां वर्ष – मार्च ७, १६५७ ई० से
बत्तीसवां वर्ष – फरवरी २४, १६५८ ई० से

प्रमुख आधार-ग्रन्थ सूची
और
संकेत-परिचय

अजमेर०— "अजमेर हिस्टारिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव," हरविलास शारडा कृत, सन् १९४१ ई०

आईन०— "आईन–इ–अकबरी," अबुल फजल कृत, ब्लाकमन और जेरेट कृत अंग्रेजी अनुवाद, द्वितीय सस्करण, भाग १-३ (बिब० इण्डिका)

आ० ना०— "आलमगीर नामा," मुहम्मद काजिम कृत, (बिब० इण्डिका)

इम्पीरियल गेजे०— इम्पीरियल गेजेटियर आफ इण्डिया, भाग १-२६.

ईश्वरदास०— "फुतूहात-इ-आलमगीरी", ईश्वरदास कृत, (हस्तलिखित) श्री रघुबीर लायब्रेरी, सीतामऊ, की प्रति.

ओझा, उदयपुर०— "उदयपुर राज्य का इतिहास", गौरीशकर हीराचद ओझा कृत, भाग १-२

ओझा, जोधपुर०— "जोधपुर राज्य का इतिहास", गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १-२

ओझा, बीकानेर०— "बीकानेर राज्य का इतिहास", गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १-२.

ओझा, राजपूताना०— "राजपूताने का इतिहास", गौरीशकर हीराचद ओझा कृत, भाग १ (द्वितीय सस्करण).

औरंग०- "हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब", यदुनाथ सरकार कृत, भाग १-५ (द्वितीय संस्करण).

कविराजा०- "कविराजा की ख्यात", भाग २, कविराजा मुरारीदान से प्राप्त प्रति की प्रतिलिपि, (हस्तलिखित) श्री रघुवीर लायब्रेरी, सीतामऊ की प्रति.

कम्बू०- "आलम-इ-सालेह", मुहम्मद सालेह 'कम्बू' कृत, भाग १-३ (बिब० इण्डिका).

कूँपावत०- "कूँपावत राठौडो का इतिहास", राव शिवनाथसिंह कृत.

खण्डेले०- "खण्डेले का इतिहास", सूर्यनारायण शर्मा कृत.

ख्यात०- 'जोधपुर की ख्यात", भाग १-४, (हस्तलिखित) श्री रघुवीर लायब्रेरी, सीतामऊ, की प्रति.

छत्र प्रकाश०- "छत्र प्रकाश", गोरेलाल लाल कवि रचित, नागरी-प्रचारणी सभा, वाराणसी.

जहा० व्रज०- "जहागीर नामा", हिन्दी अनुवादक व्रजरत्नदास, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी.

डि० गेजे०- डिस्ट्रिक्ट गेजेटियर.

देवी० जहां०- "जहांगीर नामा", मुशी देवीप्रसाद कृत.

देवी० शाह०- "शाहजहां नामा", मुशी देवीप्रसाद कृत. भाग १-३.

नैणसी०- "मुहणोत नैणसी को ख्यात", भाग १-२. नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी.

नणसो० राप्रप्र०— "मुहता नैणसो री ख्यात", स० बदरीप्रसाद साकरिया, भाग १-४. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर.

पजाब०— "हिस्ट्री ग्राफ पजाब हिल स्टेट्स", जे० हचिन्सन और जे० पी-एच० वोगेल कृत, भाग १-२.

पर्णालाख्यान०— "पर्णाल पर्वत ग्रहणाख्यान", जयराम विरचित, सपादक देवीसिंह व्यकटसिंह चौहान, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पूना ३०, सन् १९७० ई०

पा० ना०— "पादशाह नामा", अब्दुल हामिद लाहोरी कृत, भाग १-२, (बिब० इण्डिका)

बगाल०— "हिस्ट्री ग्राफ बगाल", सपादक यदुनाथ सरकार, भाग २, युनिवर्सिटी ऑफ ढाका,

बम्बई० गेजे०— बम्बई गेजेटियर, जिल्द १६ (१८८३ ई०)

बहारिस्तान०— "बहारिस्तान-इ-गैबी", मिर्जा नाथन कृत, अंग्रेजी अनुवादक डा० एम० आई० बहुआ, भाग १-२

बही०— "जोधपुर हुकमत री बही", (हस्तलिखित) श्री रघुबीर लायब्रेरी, सीतामऊ, मे प्राप्य प्रतिलिपि

बाकीदास०— "बाकीदास री ख्यात" सपादक नरोत्तम स्वामी, राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर

बिहार०— 'बिहार थ्रू दी एजेज" सपादक ग्रार ग्रार दिवाकर

बिन्हे रासो०–	"बिन्है रासो", महेशदास राव कृत, सपादक सौभाग्यसिह शेखावत. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रप्ठिान, जोधपुर
बुदेल०–	"बुदेल खण्ड का सक्षिप्त इतिहास", गोरेलाल तिवारी कृत, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी.
भोपाल० गेजे०–	भोपाल स्टेट गेजेटियर (१९०८).
मलिक अम्बर०–	"मलिक अम्बर", जोगेन्द्र नाथ चौधरी कृत
मा० उ० (हि०)०–	"मासिर-उल्-उमरा", समसामुदोला शाहनवाज खाँ कृत, हिन्दी अनुवादक ब्रजरत्नदास भाग १-५, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी.
रतलाम०–	"रतलाम का प्रथम राज्य", डा० रघुवीरसिंह कृत.
राजवाडे०–	"मराठ्याच्या इतिहासाची साधनें", भाग २६, राजवाडे सशोधक मण्डल, धूलिया.
रीवा गजे०–	रीवा स्टेट गेजेटियर (१९०७)
रेऊ, प्राचीन०–	"प्राचीन राजवश", विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत, भाग ३.
रेऊ मारवाड०–	'मारवाड का इतिहास", विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत, भाग १-२.
वश०–	"वश भास्कर", सूर्यमल मिश्रण कृत, भाग १-४
वशावली०–	बुन्देल खण्ड राज्य की वशावली (हस्तलिखित) श्री रघुवीर लाइब्रेरी, सीतामऊ की प्रति
शिव चरित्र०–	"शिव चरित्र-एक अभ्यास", सेतु माधवराव पगडी कृत, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर १९७१ ई०.

—

नणसो० राप्रप्र०— "मुहता नैणसी री ख्यात", सं० बदरीप्रसा साकरिया, भाग १-४. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर.

पजाब०— "हिस्ट्री ग्राफ पजाब हिल स्टेट्स", जे हचिन्सन ग्रौर जे० पी-एच० वोगेल कृत भाग १-२.

पर्णालाग्यान०— "पर्णाल पर्वत ग्रहणाग्यान", जयराम विर चित, सपादक देवीसिंह व्यकटसिंह चौहान, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पूना ३० सन् १६७० ई०

पा० ना०— "पादशाह नामा", ग्रब्दुल हामिद लाहोरी कृत, भाग १-२, (बिब० इण्डिका)

बगाल०— "हिस्ट्री ग्राफ बगाल", सपादक यदुनाथ सरकार, भाग २, युनिवर्सिटी ग्रॉफ ढाका,

बम्बई० गेजे०— बम्बई गेजेटियर, जिल्द १६ (१८८३ ई०)

बहारिस्तान०— "बहारिस्तान-इ-गैबी", मिर्जा नाथन कृत, ग्र ग्रेजी ग्रनुवादक डा० एम० ग्राई० बहुग्रा, भाग १-२

बही०— "जोधपुर हुकूमत री बही", (हस्तलिखित) श्री रघुवीर लायब्रेरी, सीतामऊ, मे प्राप्य प्रतिलिपि

बाकीदास०— "बाकीदास री ख्यात" सपादक नरोत्तम स्वामी, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर

बिहार०— 'बिहार थ्रू दी एजेज", सपादक ग्रार ग्रार दिवाकर.

विन्है रासो०– "विन्है रासो", महेशदास राव कृत, संपादक सौभाग्यसिंह शेखावत. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रष्ठिान, जोधपुर.

बुंदेल०– "बुंदेल खण्ड का संक्षिप्त इतिहास", गोरेलाल तिवारी कृत, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी

भोपाल० गेजे०– भोपाल स्टेट गेजेटियर (१६०८).

मलिक अम्बर०– "मलिक अम्बर", जोगीन्द्र नाथ चौधरी कृत.

मा० उ० (हि०)०– "मासिर-उल्-उमरा", समसामुदौला शाहनवाज खां कृत, हिन्दी अनुवादक ब्रजरत्नदास भाग १-५, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी.

रतलाम०– 'रतलाम का प्रथम राज्य", डा० रघुवीरसिंह कृत.

राजवाडे०– "मराठ्याच्या इतिहासाची साधनें", भाग २६, राजवाडे संशोधक मण्डल, धूलिया.

रीवा गेजे०– रीवा स्टेट गेजेटियर (१६०७).

रेऊ, प्राचीन०– "प्राचीन राजवंश", विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत, भाग ३.

रेऊ, मारवाड०– "मारवाड का इतिहास", विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत, भाग १-२.

वंश०– "वंश भास्कर", सूर्यमल मिश्रण कृत, भाग १-४.

वंशावली०– बुन्देल खण्ड राज्य की वंशावली (हस्तलिखित), श्री रघुबीर लाइब्रेरी, सीतामऊ की प्रति

शिव चरित्र०– "शिव चरित्र-एक अभ्यास", सेतु माधवराव पगडी कृत, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर, १६७१ ई०.

शिव भारत०— 'श्री शिव भारत'', कविन्द्र परमानन्द कृत, सपादक सदाशिव महादेव दिवेकर.

शोध पत्रिका०— त्रैमासिक, साहित्य सस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर.

सरकार, मुगल०— ''मुगल एडमिनिस्ट्रेशन'', यदुनाथ सरकार कृत चतुर्थ सस्करण, १९५२ ई०

हिस्टारिकल०— 'हिस्टारिकल जीनियोलोजीज'' स० गोविन्द सखाराम सरदेसाई

टिप्पणियाँ

(अकारादि क्रमानुसार व्यक्तिगत नामावली)

लेखक

मनोहरसिंह राणावत, एम्० ए०

अजबसिंह–पिता सतरसाल कछवाहा

मानगढ के स्वामी, सतरसाल (छत्रसिंह) माधोसिंह राजा भगवानदासोत कछवाहा का चतुर्थ पुत्र. नैणसी०, (राप्रप्र०). १, पृ० २९९. नैणसी०, २, पृ० १६ पर यह नाम 'अजयसिंह' छापा है, जो अशुद्ध है।

अनिरुद्ध, राजा–पिता राजा बिट्ठलदास

राजा बिट्ठलदास गौड का ज्येष्ठ पुत्र. सुविख्यात दुर्ग रणथम्भौर का किलेदार. मा० उ०, (हि०), १, पृ० ६४-६५.

अनीराय

स्पष्टतया यह उल्लेख अनूपसिंह बडगूजर का ही है. दिसम्बर, १६१० ई० मे जहाँगीर ने उसे 'अनीराय सिंह-दलन' की पदवी प्रदान की थी। मार्च १६१६ ई० मे उसका मनसब २०००–१६०० सवार का था. जहाँ० ब्रज०, पृ० २५४-२५७, ५९०.

अनूपसिंह–पिता अमरसिंह, जमींदार बाधो

बाधो (रीवा राज्य) के राजा रामचन्द्र बघेला के पौत्र राजा अमरसिंह का लडका. बाधो का शासक (१६४०-१६६० ई०). मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३३३-३३४, रीवा० गेजे०. (१९०७), पृ० १६

अनूपसिंह, राजा

राजा बीरनारायण बडगूजर का पुत्र. जहाँगीर ने उसे 'अनीराय सिंह-दलन' की पदवी दी, तब से 'अनीराय' के नाम से

प्रसिद्ध हुआ. जहाँगीर के शासनकाल मे उसने गगा-यमुना के दोआब मे गगा के पश्चिमी तट पर अपने नाम से अनूप शहर (२८°२९' उ०, ७८°१६' पू०) नामक नगर बसाया. राजा (१६३०-१६३७ ई०) मा० उ०, (हि०) १, पृ० ६५-६८, बुलन्द शहर डि० गेजे०, (१६०३), पृ० १७६, १८२-१८३.

अमरसिंह नरवरी

राजा राजसिंह आसकरणोत का प्रपौत्र और राजा रामदास के पुत्र फतेहसिंह का लडका. राजा रामदास के बाद सूबा आगरा मे नरवर सरकार के अन्तर्गत सुविख्यात नरवर किले का किलेदार और नरवर परगने का स्वामी नैणसी० (२, पृ० १२) मे दिये गये वश-वृक्ष मे गलती से अमरसिंह को रामदास का भाई बताया है और नैणसी० (राप्रप्र०, १, पृ० ३०३) मे उसे रामदास का पुत्र लिखा है. अपने पिता के समय मे ही फतेहसिंह की मृत्यु हो गई थी, इसलिये नैणसी ने स्पष्टतया भ्रमवश ही अमरसिंह को रामदास का पुत्र लिख दिया है । मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३४०-३४१

अमरसिंह बड़गूजर, राजा

राजा अनूपसिंह बडगूजर का पौत्र एव राजा जयराम का लडका. पिता के मरने के बाद राजा की पदवी मिली. मा० उ०, (हि०), १, पृ० १८६.

अमरसिंह राठौड़–पिता राजा गजसिंह

जोधपुर के राजा गजसिंह का बडा लडका. जिसे नागौर दिया गया था. वह १६४४ ई० मे शाही दरबार मे मारा गया. मा० उ०, (हि०) १, पृ० ६६-७२

अमरसिंह, राव (चन्द्रावत)

रामपुरा के शासक राव चाँदा के कनिष्ट पुत्र हरीसिंह का लडका. राव चाँदा के पुत्र रूक्मागद के लड़के राव रूपसिंह के

निसतान मरने पर रामपुरा का स्वामी. मा० उ०, (हि०), १, पृ० २१६-२१८; नैणसी०, १, पृ० १००.

अर्जुन–पिता राजा विट्ठलदास

राजा विट्ठलदास गौड का द्वितीय पुत्र और शाहजहाँ का विश्वस्त सेनानायक मनसबदार. धरमाट के युद्ध मे काम आया. मा० उ०, (हि०), १, पृ० २४१-२४२.

इन्द्रजी–पिता रनराय

उसके सबध मे कोई जानकारी प्राप्य नही है.

इन्द्रमन–पिता पहाड़सिंह बुंदेला

ओरछा के शासक पहाडसिंह का छोटा पुत्र. बडे भाई सुजानसिंह की मृत्यु के बाद सन् १६६८ ई० मे ओरछा का शासक. मा० उ०, (हि०), १, पृ० ४३६-४३७.

इन्द्रसाल–पोता राव रतन का

बूँदी के शासक राव रतन हाडा के ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ का द्वितीय पुत्र और इन्द्रगढ ठिकाने का सस्थापक. वश०, ३, पृ० २४५२, २५५६, २५६१.

ईश्वरसिंह–पिता अमरसिंह राठौड़

जोधपुर के शासक राजा जसवतसिंह के बडे भाई नागौर के स्वामी राव अमरसिंह का छोटा लडका. ख्यात०, १, पृ० २७०.

उग्रसेन (पड)पोता राजा मानसिंह कछवाहा का.

हिम्मतसिंह राजा मानसिहोत के छोटे लडके कल्याणसिंह का पुत्र नैणसी०, २, पृ० १६.

उग्रसेन–पिता सतरसाल कछवाहा

सतरसाल (छत्रसिंह) माधोसिंह राजा भगवानदासोत कछवाहा का तृतीय पुत्र. नैणसी०, २, पृ० १६.

उग्रसेन कछवाहा

राव मनोहरदास शेखावत के छोटे भाई नरसिंहदास का ज्येष्ठ पुत्र. नैणसी०, २, पृ० ३३-३४.

उत्तमनारायण–जमींदार बड़नगर

उत्तर-पश्चिमी आसाम मे कामरूप क्षेत्र की एक छोटी जमीदारी का शासक इस जमीदारी अथवा इसके मुख्य स्थान वडनगर की सही भौगोलिक स्थिति निश्चित करने के लिये अत्यावश्यक जानकारी अप्राप्य है बगाल०, पृ० ३२६-३० बहारिस्तान०, २, पृ० ८३८

उदयभान–पिता श्यामसिंह

श्यामसिंह करमसी उग्रसेनोत राठौड का वडा लडका, भिणाय (अजमेर) का स्वामी कम्बू० (३, पृ० ४६७) भ्रमवश ही उसके पिता का नाम 'रामसिंह' लिखा है अजमेर०, पृ० २६३.

उदयभान, राजा–पिता राजा गिरधर

राजा गिरधर केशोदास जयमलोत मेडतिया का उत्तराधिकारी. परबतसर का परगना पट्टे मे था। कविराजा०, २ पृ० १७८.

उदयसिंह, राजा–पिता राजा मानसिंह, जमींदार जम्मू

सभवत यह राजा उदयसिंह उसी राजा मान का पुत्र था, जो ग्वालियर के किले की शाही जेल की कैद से छोडा जाकर कागडा की चढाई पर भेजा गया था वही सन् १६१७ ई० मे राजा मान काम आया, तब उसका मनसब १५००–१००० सवार का था. जहाँ० व्रज०, पृ० ३६८, ३६१, ४००, ४२४, पजाब०, १, पृ० १५४-१५८

जम्मू–यह स्थान कहाँ था, तथा राजा मान और उसका पुत्र उदयसिंह किस जम्मू के जमीदार थे, इसकी कोई जानकारी कही भी नही मिलती है यह तो अवश्य सुनिश्चित है कि वे जम्मू (काश्मीर) के शासक नही थे, क्योकि तब वहाँ सग्रामसिंह और

बाद में उसके उत्तराधिकारी भूपतदेव के शासक होने के उल्लेख मिलते हैं. पजाव०, २. पृ० ५३८-५३९; मा० उ०, (हि०), ५, पृ० १६४

उदयसिंह, राजा–पिता श्यामसिंह तवर

ग्वालियर के अन्तिम शासक राजा रामशाह के पुत्र शालिवाहन के बड़े लड़के राजा श्यामसिंह का उत्तराधिकारी.

ऊदाजीराम दक्खिनी

दक्षिणी ब्राह्मण पहले अहमदनगर राज्य की सेवा में था. मा० उ०, (हि०), १. पृ० ८१-८३

ऊदाजीराम पिता ऊदाजीराम दक्खिनी

ऊदाजीराम का दत्तक पुत्र पूर्वनाम जगजीवन. महावत खाँ द्वारा दिये गये नाम 'ऊदाजीराम' से तदनन्तर सुज्ञात. मा० उ०, (हि०), १, पृ० ८३-८४.

कन्हो–पिता बलभद्र शेखावत

बलभद्र नारायणदास मानसिंह तेजसिंह रायमलोत शेखावत का ज्येष्ठ पुत्र. नैणसी०, (राप्रप्र०) २. पृ० ३२६ नैणसी०. (२. पृ० ४०) में इसका नाम भ्रमवश करणीदास लिखा है

करण, राव–पिता सूर भुरटिया

बीकानेर के शासक सूर भुरटिया का उत्तराधिकारी शासक (१६३१ ई०–१६६९ ई०). मा० उ०, (हि०), १. पृ० ८५-८६

करमसी राठौड़

जोधपुर के शासक राव चन्द्रसेन का पौत्र और उग्रसेन का लड़का. जहाँगीर और शाहजहाँ का प्रमुख सेनानायक. ख्यात०, १. पृ० ६५, बाँकीदास०. पृ० २१. क्र० २०६-२०८.

फासीदास, राय

शाहजहां का विश्वस्त अधिकारी जो काबुल, आगरा, बंगाल आदि अनेक सूबों का दीवान रहा. देवी० शाह०, २, पृ० १२, ११०, १६०, २१४

किशनसिंह (पड़)पोता राजा मानसिंह कछवाहा का

जुझारसिंह जगतसिंहोत का चौथा पुत्र और आम्बेर के राजा मानसिंह का प्रपोत्र नैणसी०, २, पृ० १४.

किशनसिंह तवर, राजा

शालिवाहन के पुत्र राजा श्यामसिंह के द्वितीय पुत्र सग्रामसिंह का बडा लडका और राजा उदयसिंह का उत्तराधिकारी सन् १६४४ ई० मे मुगल सेना ने मुराद के नेतृत्व मे बल्ख पर चढाई की तब किशनसिंह भी साथ था. सन् १६४७ ई० मे उसका मनसब ५०० जात-५०० सवार का था शुक्रवार, मार्च ५, १६५२ ई० को उसका मनसब १००० जात-५०० सवार का कर दिया औरंगजेब के नेतृत्व मे जब मुगल सेना ने सन् १६५२ ई० में दूसरा घेरा डाला तब किशनसिंह तवर भी उस सेना के साथ था. किशनसिंह तवर शामूगढ युद्ध मे दारा की तरफ से लडा था परन्तु बाद मे औरगजेब के साथ जा मिला, तब उसका मनसब १५०० जात-१००० सवार का कर दिया गया था कम्बू० (३, पृ० ४६७) मे भ्रमवश ही उसे किशनसिंह गौड' लिखा गया है गौडो मे तब किशनसिंह नाम का कोई राजा नही हुआ ओझा, राजपूताना०, (२ स०), १, पृ० २६७; पा० ना०, २, पृ० ४८२-४८४, ७४७, वारिस०, १, पृ० २२६-२२९, २, पृ० २०७, कम्बू० ३, पृ० १४३, आ० ना०, पृ० ६५ ३०४ ४२८.

किशनसिंह भदौरिया

भदावर क्षेत्र का शासक. मा० उ० (हि०), १, पृ० १०५-१०६.

भदावर—अटेर परगने के तत्कालीन भदावर गाँव के मूल निवासी होने के कारण 'भदौरिया' कहलाने वाले राजपूतों का अधिकार क्षेत्र, जो तब चम्बल के दोनों तटों पर फैला हुआ था,

तथा अटेर भिण्ड, पट्टी और बाह परगने उसके अन्तर्गत गिने जाते थे आगरा डि० गेजे०, (१९०५), पृ० ८८-८९

किशोरसिंह–पिता माधोसिंह

कोटा राज्य के सस्थापक राव माधोसिंह हाडा का पाँचवाँ पुत्र धरमाट के युद्ध मे घायल हुआ कोटा का शासक (१६८४ ई०–१६९६ ई०) कम्बृ० (३, पृ० ४८०) मे भ्रमवश और असावधानी के कारण ही उसका नाम 'कपूरसिंह' लिखा है

कीरतसिंह–पिता राजा, जयसिंह

आम्बेर के सुविख्यात शासक मिर्जा राजा जयसिंह का द्वितीय पुत्र मा० उ०, (हि०), १, पृ० १०२-१०४

कूंवरसेन किश्तवारी, राजा

किश्तवार क्षेत्र का शासक पजाब० (२, पृ० ६५०-६५२) मे स्थानीय ख्याता के आधार पर कूंवरसेन की मृत्यु सन् १६२९ ई० म होने का उल्लेख है, परन्तु वह सर्वथा अमान्य है, क्योकि बारिस० (२, पृ० २०८) के अनुसार कुंवरसेन की मृत्यु सन् १६५६ ई० मे हुई थी स्थानीय ख्यातो आदि मे कुंवरसेन के स्थान पर "गुरसेन" अथवा "गुरसिंह" मिलता है

किश्तवार–इसी नाम के क्षेत्र का यह मुख्य नगर, किश्तवार (३३°२०' उ०, ७५°४५' पू०), हिमालय के पहाडो मे चन्द्रभागा नदी की घाटी मे स्थित है

कृपाराम गौड

सन् १६३२ ई० मे कृपाराम को चकले हिसार का फोजदार नियुक्त किया गया था वह कहाँ का रहने वाला और किसका पुत्र था इस सबध मे कोई प्रामाणिक जानकारी प्राप्य नही है देवी० शाह०, १, पृ० ७०

केसरीसिंह राठौड

भारमलोत राठौड बल्लू तेजसिंघोत के पुत्र पृथ्वीराज का छोटा लड़का मा० उ०, (हि०), १, पृ० २३१, रतलाम०, पृ० ६८

गजसिंह राठौड, राजा–पिता राजा सूरजसिंह

जोधपुर के शासक राजा सूरसिंह (सूरजसिंह) का पुत्र और जोधपुर का शासक (१६१६–१६३८ ई०) मा० उ०, (हि०), १, पृ० १०८-११०

गरीबदास सीसोदिया–पिता राणा करण

मेवाड के महाराणा करण का द्वितीय पुत्र मुरादबख्श के साथ रहा और शामूगढ के युद्ध मे काम आया मेवाड मे केर्या और वासडा के ठिकाने उसके वशजो के अधिकार मे रहे. आ० ना०, पृ० १०७, ईश्वरदास०, प० १७ अ, २४ अ, नैणसी०, १, पृ० ७६, ओझा, उदयपुर०, २, पृ० ५१६, ६७६, ६८३.

गिरधर, राजा–पिता केसोदास, पोता जेमल मेडतिया का

चित्तौड के अन्तिम साके के सुविख्यात वीर जयमल मेडतिया का पौत्र जहाँगीर और शाहजहाँ का विश्वस्त अधिकारी. परबतसर का परगना उसके पट्टे था कविराजा०, २, पृ० १७८, शोध-पत्रिका, (उदयपुर), वर्ष १२–अक ३, पृ० ३-४.

गिरधरदास–पिता रावल पूंजा

डूँगरपुर राज्य के रावल पूँजा का ज्येष्ठ पुत्र और डूँगरपुर का शासक (१६५७–१६६१ ई०)

गिरधरदास–भाई राजा बिट्ठलदास

राजा गोपालदास गौड का पुत्र और राजा बिट्ठलदास गौड का छोटा भाई तीसरे वर्ष खानजहाँ लोदी के विरुद्ध भेजी गई सेना के साथ वह भी था बही०, पृ० २०५, देवी० शाह०, १, पृ० २४

गोकलदास सीसोदिया

मेवाड के राणा उदयसिंह के पुत्र शक्तिसिंह के ज्येष्ठ पुत्र भाण का चौथा लडका नैणसी०, १, पृ० ६४, ६६

गोपालसिंह–पिता राजा मनरूप कछवाहा

राजा जगन्नाथ मारमलोत के पुत्र राजा मनरूप का ज्येष्ठ पुत्र अक्तूबर, १६३० ई० में मनरूप के मृत्योपरान्त उसे ८०० जात-४०० सवार का मनसब प्रदान किया गया. टोडा का पट्टा मिला था. नैणसी०, (राप्रप्र०), १, पृ० ३०१. गोपालसिंह का नाम असावधानी के कारण नैणसी० (२, पृ० १८) मे छूट गया है. देवी० शाह०, १, पृ० ३६.

गोरधनदास राठौड़

चांदसिंह कूँपावत राठोड का ज्येष्ठ पुत्र चण्डावल (परगना सोजत) का स्वामी. राजा गजसिंह और शाहजहाँ का क्रमशः विश्वस्त सेनानायक. धरमाट के युद्ध मे काम आया. ख्यात०, १, पृ० १५६-१५७, २०८; ओझा, जोधपुर०, १, पृ० ३६३; कूँपावत०, पृ० ७००-७०३.

गोविन्ददास राठौड़

मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र भगवानदास का लडका. अजमेर में गोविन्द गढ ठिकाने का सस्थापक. ख्यात०, १, पृ० १०५; अजमेर०, पृ० २८६, ३००.

चन्द्रभान–जमींदार कांगड़ा

संभवतः राजा धरमचन्द के छोटे भाई कल्याणचन्द का वशज. राजा धरमचन्द के पोत्र जयचन्द के प्रपौत्र हरीचन्द के बाद कांगडा का स्वामी. पजाब०, १, पृ० १७२-१७३.

चन्द्रभान नरूका

चेतसी सिहोत नरूका का ज्येष्ठ पुत्र. उसकी पुत्री का विवाह जोधपुर के राजा गजसिंह के साथ हुआ था. सूबा अजमेर की सरकार रणथम्भौर के अन्तर्गत उणियारा ठिकाने का सस्थापक. नैणसी०, २, पृ० २८-२६; ख्यात०, १, पृ० १८६. आईन०, २, पृ० २७९.

चन्द्रमन बुंदेला

ओरछा के सुविख्यात शासक नरसिंहदेव (वीरसिंहदेव) का छठा पुत्र जैतपुर को जागीर की स्वामी बुदेल० (पृ० १४०) और वशावली (पृ० ६,८) मे उसका नाम चन्द्रभान मिलता है

चपत बुदेला

ओरछा के शासक रूद्रप्रताप के तृतीय पुत्र उदयाजीत का प्रपौत्र और प्रेमचन्द के पुत्र भगवतराय का लडका. छत्र प्रकाश०, पृ० ११, १३-१५, मा० उ०, (हि०), १, पृ० १३६-१३७

चम्पत सीसोदिया

सभवत वारिस० (२, पृ० २१८) मे 'हुब्बा सीसोदिया' और यहा 'चम्पत सीसोदिया के ये दोना उल्लेख एक ही व्यक्ति के सबध मे है उसका सही नाम आदि निर्धारित करना सभव नही क्योंकि किसी के भी सबध मे कोई प्रामाणिक जानकारी प्राप्य नही है

चतुरभुज चौहान

लखमीसेन चोहान का पौत्र और अजाऊँ का जमीदार बहो०, पृ० १३, पा० ना०, पृ० ५५०

चतुरभुज सोनगरा

नारायणदास का पुत्र और भाण अखैराजोत का पौत्र नैणसी० १, पृ० १६७-८

चतुरभुज–भतीजा श्यामसिंह का

स्पष्टतया कम्बू० का यह उल्लेख भ्रमपूर्ण है ऐसा कोई उल्लेख अन्य किसी भी सूची मे नही है पा० ना० (१, पृ० ३१०) मे यही मनवस श्यामसिंह का दिया है सभवत कम्बू० मे उसी की यो भ्रातिपूर्ण विकृत पुनरावृति की गई हो दूसरी सभावना यह है कि यह 'मित्रसेन भाई श्यामसिंह तवर' का ही अशुद्धिपूर्ण उल्लेख हो

जगतसिंह–पिता पृथ्वीराज राठौड़

भारमलोत राठोड वल्लू तेजसियोत के पुत्र पृथ्वीराज का वडा लडका रतलाम०, पृ० ६७-६८, १४५.

जगतसिंह–पिता राजसिंह राठौड़

तब आसोप के स्वामी राजसिंह खीवकरणोत का द्वितीय पुत्र वारिस० (२, पृ० २१६) मे लिखे अनुसार राजसिंह के इसी पुत्र का देहान्त दिसम्बर, १६५० ई० मे हुआ था. वारिस० में इसका नाम भ्रमवश 'जयसिंह' लिखा है, जयसिंह की मृत्यु सन् १६६४ ई० में ही पूना में हुई थी. कम्बू० (३, पृ० ४८६) मे उसका नाम भ्रमवश 'अजयसिंह' लिखा है, परन्तु राजसिंह के इस नाम का कोई भी पुत्र नही था. कूपावत०, पृ० २२७-२३०, २६१,

जगतसिंह, राजा–पिता राजा वासू

राजा वासू का उत्तराधिकारी पुत्र. पठानकोट और मऊ जिलो का स्वामी, राधजानी नूरपुर. शाहजहाँ का विश्वस्त सेनानायक मा० उ०, (हि०), १, पृ० १४५-१४८, पजाव०, १, पृ० २३२-२५४.

नूरपुर–कागडा जिले मे नूरपुर तहसील का केन्द्र-स्थान (३२°१८' उ०, ७५°५४' पू०). पूर्वनाम धमेरी. वहाँ नया दुर्ग वनाकर जहाँगीर के नाम पर सन् १६२२ ई० मे राजा जगतसिंह ने इसे 'नूरपुर' नाम दिया जहाँ० व्रज०, पृ० ७३६; पजाव०, १, पृ० २२५.

जगतसिंह, राणा

मेवाड का शासक (१६२८-१६५२ ई०). मा० उ०, (हि०), १, पृ० ६६.

जगदेवराय–भाई जादोराय दक्खिनी

सिदखेड के जादव विठोजी का पुत्र और जादोराय प्रथम (लखोजी) का भाई. मा० उ०, (हि०), १, पृ० १७७-१७८, हिस्ट्रिकस०, पृ० ४७.

जगन्नाथ राठौड

सभवत. करमसी उग्रसेनोत राठौड का कनिष्ट पुत्र. बाकीदास०, पृ० २१ क्र० २०८

जगन्नाथ राठौड़, राय

जोधपुर के प्रतापी शासक राव मालदेव के ज्येष्ठ पुत्र राम के तीसरे लडके केशोसाद का दत्तक पुत्र. मालवा मे अमझरा राज्य का सस्थापक. ख्यात०, १, पृ० ११६, १६७-१६८, शोध पत्रिका, उदयपुर, वर्ष १२ अक ३, पृ० ५-६

जगमन जादो, राजा

करौली राज्य के शासक राजा मुकुन्द जादो का उत्तराधिकारी पुत्र करौली का शासक (१६२२-१६५६ ई०).

जगमाल राठौड़–पिता किशनसिंह

मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र राजा किशनसिंह का द्वितीय लडका और किशनगढ का शासक (१६१६-१६२६ ई०). रेऊ, प्राचीन०, ३, पृ० ३६६-३७०

जगराम कछवाहा

हिरदेराम अखेराज राजा भगवतदासोत कछवाहा का पुत्र. नैणसी०, २, पृ० १८.

जयराम–पिता राजा अनीराय

राजा अनूपसिंह बडगूजर (अनीराय) का उत्तराधिकारी पुत्र था. राजा (१६३७-१६४७ ई०). मा० उ०, (हि०), १, पृ० १८८-१८६.

जयसिंह कछवाहा, राजा

आम्बेर के सुविख्यात राजा मानसिंह के ज्येष्ठ पुत्र जगतसिंह का पौत्र और महासिंह का लडका. जयपुर राज्य का शासक (१६२१-१६६७ ई०) मा० उ०, (हि०), १, पृ० १५४-१६२.

सवत-भाई महेशदास राठौड़

मोटा राजा उदयसिंह के चौथे पुत्र दलपत राठौड का कनिष्ट
लडका और महेशदास का भाई. कविराज०, २, पृ० २४६,
रतनाम०, फु० नो०, पृ० ११-१२

जमवर्तासह, राजा–पिता गर्जासह

राजा गर्जसिंह का द्वितीय पुत्र और जोधपुर का शासक
(१६३८-१६७८ ई०) मा० उ०, (हि०), १, पृ० १६६-१७४

जादोराय दक्खिनी

सिंदखेड के जादव विठोजी के पुत्र जादोराय के सभावित
उत्तराधिकारी पौत्र स्वर्गीय यशवतराव का छोटा भाई पूर्वनाम
पनगराव, शाहजहाँ ने उसे जादोराय की पदवी दी घरमाट के
युद्ध में वह औरगजेब की ओर से लडा था. इस दूसरे जादोराय
(पनगराव) के पिता के नाम के बारे मे कोई प्रामाणिक उल्लेख
कहीं नहीं मिलता है मा० उ०, (हि०), १ पृ० १७८, आ० ना०,
पृ० ६३

जीवाजी–भतीजा मालूजी दक्खिनी का

विठोजी के पुत्र मालूजी का भतीजा बम्बू० (३ पृ० ४७६)
म भ्रमवश ही जीवाजी को मालूजी का भाई लिखा है यह
'जीवाजी' मालूजी के किस भाई का पुत्र था इस बारे मे निर्णय
कर सकने के लिये कोई निश्चित जानकारी नही है

परसूजी भोसले के ज्येष्ठ पुत्र सयाजी को सन् १६५२ ई० मे
बरार सूबे का माहुरी परगना दिया गया था उसके अन्य दो पुत्रों
के नाम जयसिंहजी और सरीफजी थे राजवाडे०, २६, पृ०२-७

जुगराज बुन्देला

ओरछा के राजा जुझारसिंह का पुत्र पूर्वनाम विक्रमाजित
शाहजहाँ ने 'जुगराज' की पदवी प्रदान की थी मा० उ०, (हि०),
१, पृ० १८२-१८३.

जुझारसिंह बुन्देला, राजा–पिता राजा नरसिंहदेव

ओरछा के राजा नरसिंहदेव (वीरसिंहदेव) का ज्येष्ठ पुत्र. ओरछा का शासक (१६२७–१६३४ ई०). मा० उ०, (हि०), पृ० १८४-१८७.

जेतसिंह राठौड़

मोटा राजा उदयसिंह का पुत्र. दुगोली घराने का आदि पुरुष. कम्बू० (३, पृ० ४६६) मे भ्रमवश और असावधानी के कारण ही उसी के उल्लेख को दोहराते समय 'जैतसिंह' के स्थान पर 'जगतसिंह' लिखा है. ख्यात०, १, पृ० १०७, बांकीदास०, पृ० ७० क्र० ७७३.

जोधा, राना–जमींदार उमरकोट

राणा गांगा चांपावत के पुत्र मानसिंह परमार का लडका. मानसिंह के बाद उमरकोट का स्वामी. नैणसी०, १, पृ० २४८, २५३.

उमरकोट–(२५°२१' उ०' ६९°४९' पू०) तब सूबा मुल्तान की सरकार नसीरपुर में स्थित प्रमुख नगर. अब पाकिस्तान के सिंध प्रान्त के अन्तर्गत है आईन० २, पृ० ३४२, इम्पीरियल० गेजे०, २६, पृ० ११७-११८

टोडरमल, राजा

शाहजहां का योग्य अधिकारी तथा अतिविश्वस्त मनसवदार. मा०. उ०, (हि०), १ पृ० २००-२०१.

तिलोकचन्द, राय

सभवत. शाहजहां का शासकीय कर्मचारी. वह किसका पुत्र और कहाँ का था, इस संबंध मे कोई जानकारी प्राप्य नही है.

तिलोकचन्द, राय–पोता राय मनोहर का

शेखावाटी मे मनोहरपुर नगर बसाने वाले राव मनोहरदास शेखावत का पौत्र और रायचन्द का पुत्र. नैणसी०, २, पृ० ३३.

दत्ताजी-पिता बहादुरजी दक्खिनी

सिंदखेड के जादव जादोराय प्रथम (लखोजी) के छोटे लडके बहादुरजी का पुत्र मा० उ०. (हि०) १, पृ० १७८, हिस्टा-रिकल०, पृ० ४६

दयानतराय

यह गुजराती नागर शाहजहाँ का सुयोग्य विश्वस्त कर्मचारी था चौथे वर्ष मे शाहजहाँ ने उसके मनसव मे वृद्धि कर खालसे के आफिस का अधिकारी दीवान-इ-खालसा नियुक्त किया दीवान-उल (वजीर) अफजल खा अल्लामी के देहात पर उसके पेशकार इस दयानतराय को उसके कुछ अधिकार प्राप्त हुए थे बाद मे कारखानो का दीवान भी रहा और रायरायाँ का खिताब मिला मा० उ०, (हि०). २, पृ० ४०, देवी० शाह०, १, प० ५०, देवी शाह०, २, पृ० १५, ५५, ५६, ८५, १२६

दयालदास झाला, रावत

नरहरदास सांवलदासोत झाला का पुत्र मालवा सूबे की कोटही पिडावा सरकार में गगधार परगने का स्वामी (१६३०-१६५८ ई०). धरमाट के युद्ध मे काम आया नैणसी०, २ पृ० ४७३-४७४, ख्यात०, १, पृ० २०७

दलपत-पिता माडण राठौड़

मासोप के स्वामी माडण कूंपावत राठौड का चतुर्थ पुत्र दलपत सबधी पा० ना० (१ पृ० ३२२) के उल्लेख को दोहराते समय वम्बू० (३ पृ० ४८२) ने उसका नाम भ्रमवश 'दिलीप' लिख दिया है कूंपावत०, पृ० १७४, ६१४

दूदा, राव-पोता राव चांदा का

रामपुरा के स्वामी राव चादा के स्वर्गीय ज्येष्ठ पुत्र नगजी का लडका. चादा के बाद रामपुरा का स्वामी. नैणसी०, १, पृ० १००; मा० उ०, (हि०), १, २१३-२१४.

देवीसिंह, राजा–पिता राजा भारत बुंदेला

चंदेरी के राजा भारत का पुत्र चंदेरी का स्वामी (१६३३-१६५३ ई०) मा० उ०, (हि०), १ पृ० २२०-२२३

द्वारकादास, राजा–पिता गिरधर कछवाहा

राजा गिरधरदास रायसलोत का ज्येष्ठ पुत्र खंडेले का स्वामी नैणसी० २ पृ० ३५

धन्नाजी

लगभग सन् १६५० ई० के बाद मे नियुक्त कोई निम्न श्रेणीय शाही मनसबदार जिसके वंश तथा स्थान के बारे मे कोई जानकारी प्राप्त नही है

नरहरदास झाला

मेवाड के सुविख्यात वीर झाला अज्जा के प्रपौत्र सावलदास मालावत झाला का बडा लडका नैणसी० २, पृ० ४७३-४७४

नरहरदास–भाई बेनीदास

ओरछा के सुविख्यात राजा वीरसिंहदेव बुंदेला का पुत्र धामोनी जागीर का स्वामी कम्बू० (३, पृ० ४८४) मे भ्रम वश ही उसे बेनीदास का पुत्र लिख दिया है बुंदेल० पृ० १४०

नारायणदास सीसोदिया

महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह के द्वितीय पुत्र अचलदास शक्तावत का लडका *नैणसी० १ पृ० ६५ ६७ ओझा उदयपुर०,* १ पृ० ५०३ ५०४

नाहर–पिता राजसिंह

आसोप के स्वामी राजसिंह खीवकरणोत का ज्येष्ठ पुत्र पूर्व नाम मुकन्ददास शाहजहाँ द्वारा नाहर खा की उपाधि प्रदान किये जाने पर तदनन्तर इसी नाम से प्रसिद्ध हुआ आसोप का स्वामी (१६२०-१६५८ ई०) सभवत इसी उल्लेख को दोहराते समय ही कम्बू० (३ पृ० ४७०) मे भ्रमवश 'माहरू' पिता राजा

६१

उर्वान्ट् लिख दिया होगा क्योंकि राजा जयसिंह के ऐसे नाम का कोई पुत्र नहीं था. वृन्दावन०, पृ० २२६,२३०-२३६.

नाहर सोनगरा

राघोदास का पुत्र शाहजहा का विश्वस्त मनसबदार नैणावा का स्वामी उसकी पुत्री का विवाह राव छत्रसाल हाडा (बूदी) हुआ था नैणसी० १, पृ० २२०, वश० ३, पृ० २५५६

नीलकण्ठ–भाई रायरायाँ

रायरायाँ रघुनाथ का भाई उसके सबध मे कोई विशेष जानकारी प्राप्य नही है

परदुमन–भाई राजा विट्ठलदास

सही नाम प्रद्युमन राजा गोपालदास गौड का पुत्र और राजा विट्ठलदास का भाई कम्बू० (३, पृ० ४७७) मे भ्रमवश ही उसका नाम सरघुन और उसे राजा विट्ठलदास गौड का भतीजा लिखा है वही०, पृ० २०५

परसूजी दक्खिनी

विठोजी भोसले का पुत्र और मालूजी का छोटा भाई मा० उ०, (हि०) १, पृ० ३०४-३०७

पहाड़सिंह बुंदेला, राजा–पिता राजा नरसिंहदेव

ओरछा के सुविख्यात राजा नरसिंहदेव (वीरसिंहदेव) का द्वितीय पुत्र ओरछा का शासक (१६४१-१६५४ ई०) मा० उ०, (हि०), १, पृ० २२१, २२४-२२८,

पीथूजी–पिता अचलाजी दक्खिनी

निःसंदेह वे जाधव विठोजी के पुत्र जादोराय (लखजी) के पौत्र और अचलाजी का लड़का. उसे बरार और खानदेश में जागीरें मिली थी माहोरी०, बादशा० और कम्बू० ने इसका नाम पीथूजी लिखा है परन्तु उसका सही नाम बीठोजी था. मा० उ० (हि०), १, पृ० १७७-१७८. देवी० शाह०, १, पृ०

पूंजा, रावल–जमींदार डूंगरपुर

डूगरपुर के रावल कर्मसिंह का उत्तराधिकारी और डूगरपु
का शासक (१६०६–१६५७ ई०).

पूरणमल बुन्देला

ओरछा के शासक वीरसिंहदेव बुन्देला के कनिष्ट पुत्र चन्द्रम
के ज्येष्ठ पुत्र अमरेश का लडका. पेशावर मे उसका वाग
हवेली थी जब महाराजा जसवन्तसिंह जमरूद के थानेदार
हुए तब उनके राजघराने का निवास वही था और
का देहान्त भी वही हुआ था. वशावली०, पृ० ६
पृ० ३०८

पृथ्वीचन्द, राजा–जमींदार चम्बा

चम्बा के राजा बलभद्र का पुत्र चम्बा
१६६४ ई०).

चम्बा राज्य–पजाब के उत्तर
राजधानी चम्बा नगर (३२"२९' उ०
१, पृ० २६८, ३०४-३०८

पृथ्वीराज चौहान

उसके बारे मे कोई जानका

पृथ्वीराज भाटी

जोधपुर के राजा सूरसिंह
भाटी का सबसे छोटा पुत्र.
१, पृ० ३५३.

पृथ्वीराज राठौड़

भारमलोत राठौड बल्लू
विश्वस्त अधिकारी और

(हि०), १, पृ० २२६-२३१; कविराजा०, २, पृ० १५६; रतलाम०, पृ० १४५-१४६.

पृथ्वीसिंह-(पड़)पोता राजा मानसिंह का

आम्बेर के राजा मानसिंह के ज्येष्ठ पुत्र जगतसिंह का पौत्र और जुझारसिंह का तीसरा लडका नैणसी० (२, पृ० १४) मे उसका नाम पृथ्वीराज लिखा है.

प्रताप चेरो-जमींदार पालामऊ

पालामऊ के जमीदार वलभद्र का पुत्र और तव पालामऊ का जमीदार देवी० शाह०, २, पृ० ८७, ८६, औरंग०, ३, पृ० ३२-३४.

चेरो-आदिवासी जाति जिसका ईसा की १७ वी शती के प्रारम्भ मे पालामऊ क्षेत्र पर प्रभुत्व था औरंग०, ३, पृ० ३१-३२.

पालामऊ-वर्तमान विहार राज्य में छोटा नागपुर सभाग के अन्तर्गत पालामऊ परगने का केन्द्र स्थान (२३°५३' उ० ८४°१३' पू०). औरंग०, ३, पृ० ३०-३१

प्रतापसिंह उज्जैनिया, राजा

दलपत उज्जैनिया का पुत्र और भोजपुर राज का शासक. सन् १६२८ ई० मे शाहजहाँ से उसे 'राजा' का खिताव और शाही मनसव मिला विद्रोह करने के वाद आत्म-समर्पण पर मृत्यु दण्ड (सन् १६३७ ई०) मा० उ०, (हि०). १, पृ० १४६, ४, पृ० ३७५, विहार०, पृ० ४६४-४६५.

भोजपुर-(२५°३५' उ०, ८४'८' पू०) विहार सूवे मे रोहतास सरकार के भोजपुर महल का केन्द्र स्थान तथा उज्जैनिया राजघराने की राजधानी. उज्जैन (मालवा) के सुप्रसिद्ध परमार राजाओ के वशज होने के कारण यह राजघराना उज्जैनिया कहलाता है आईन०, २, पृ० १६८; १; पृ० ५७७ पा० टि०.

प्रतापसिंह चौहान

उसके सवध मे कोई जानकारी प्राप्य नहीं है.

बहादुरजी दक्खिनी–पिता जादोराय

सिंदखेड के जाधव विठोजी के पुत्र जादोराय का छोटा लडका दोलताबाद के युद्ध के समय जादोराय अपने भाई-बेटो के साथ बादशाही सेवा छोड कर निजाम से जा मिला था तदनन्तर जादो-राय के मारे जाने पर उसके भाई-पुत्र-पौत्रादि दोलताबाद से भाग कर जालना के पास जादोराय के बनवाये किले मे जा छिपे और बादशाह से क्षमा प्रार्थना कर अन्य तो शीघ्र ही पुन शाही मनसब-दार बन गये परन्तु बहादुरजी लगभग कोई डेढ वर्ष बाद ही पुन शाही मनसबदार बना मा० उ० (हि०) १ पृ० १७८, हिस्टारि-कल०, पृ० ४७, देवी० शाह० १, पृ० ३५ ६१-६२ ६५

बहादुरसिंह–भाई राजा बिट्ठलदास

राजा गोपालदास गौड का छोटा पुत्र और राजा बिट्ठलदास गौड का भाई धरमाट के युद्ध मे काम आया कम्बू० (३ पृ० ४८४) मे इसका नाम बहारसिंह' लिखा है बिन्हैरासो (पृ० ३६, ४८ ६५, ८३, ९२, ९७) मे उसका उल्लेख वीरभद्र नाम से किया है

बाला–पिता राजा जगन्नाथ कछवाहा

आम्बेर के राजा भारमल के पुत्र जगन्नाथ का आठवाँ लडका नैणसी०, २, पृ० १७-१८

बिजयराम–भाई राजा बिट्ठलदास

राजा गोपालदास गौड का चौथा पुत्र और राजा बिट्ठलदास गौड का छोटा भाई कम्बू० (३, पृ० ४८४) मे भ्रमवश ही उसको राजा बिट्ठलदास का भतीजा लिखा है वही०, पृ० २०५

बिट्ठलदास गौड, राजा

राजा गोपालदास गौड का द्वितीय पुत्र शाहजहाँ का विश्वस्त सेनानायक. रणथंभोर और आगरा का किलेदार रहा और अजमेर की फौजदारी भी मिली थी शाहजहाँ के शासनकाल के दसवें वर्ष मे घघेडा परगना (सरकार सारंगपुर, सूबा मालवा) वतन के रूप

मे जागीर मे मिला था. मा० उ०, (हि०), १, पृ० २३८-२४०; विन्हैरासी, पृ० ६०-६१; देवी० शाह, १, पृ० २५, ५१, ८७, २११, २१८-२२३.

बिहारीदास कछवाहा

नाथा गोपालदास पृथ्वीराजोत का ज्येष्ठ पुत्र. नैणसी०, २, पृ० १६.

बिहारीमल, राय

लाहौर, मुलतान और पजाब आदि अनेकानेक सूबो का दीवान रहा. और दारा शिकोह का भी दीवान नियुक्त हुआ था. देवी० शाह०, २, पृ० ५८, १०६, २१८.

बीरनारायण–जमींदार पचेट, सूबा बिहार के आधीन

तब सूबा बिहार के आधीन पचेट का जमीदार

पचेट–(२३°३७' उ०, ८६°४७' पू०) वर्तमान बगाल के मानभूम जिले की एक जमीदारी. इम्पीरियल गेजे०, १६, पृ० ३७८.

बीरनारायण बड़गूजर, राजा

गगा-यमुना के दोआब का अच्छा निशानबाज बडगूजर राजपूत जो अपने पिता के साथ ही शाही शिकारखाने मे नियुक्त हुआ तब ही उसे शाही मनसब भी मिला था. कम्बू० (३, पृ० ४६६) मे भ्रमवश ही उसी के उल्लेख को दोहराते हुए उसका नाम 'हरनारायण' लिखा है. मा० उ०, (हि०), १, पृ० ६५.

बीरभान–जमींदार चन्द्रकोना (बगाल)

चन्द्रकोना का जमींदार बहारिस्तान०, १, पृ० ३२८; बंगाल०, २, पृ० २३६.

चन्द्रकोना–(२२°४४' उ०, ८७°३२' पू०) पश्चिमी बंगाल के मिदनापुर जिले में स्थित एक नगर. तब चन्द्रकोना जमीदारी का मुख्य स्थान. इम्पीरियल गेजे०, १०, ,० १६६; बहारिस्तान०, २, पृ० ८२३.

वीरमदेव सीसोदियो

राणा अमरसिंह के पुत्र सूरजमल का छोटा लडका और शाहपुरा के स्वामी सुजानसिंह का भाई उसकी लडकी का विवाह जोधपुर के राजा जसवतसिंह के साथ हुआ था मा० उ०, (हि०), १, पृ० ४३३-४३४, ख्यात०, १, पृ० २५८

बेनीदास-पिता राजा नरसिंहदेव बुदेला

ओरछा के सुविख्यात राजा नरसिंहदेव (वीरसिंहदेव) का पाँचवा पुत्र (२५०२२' उ०, ८०°१४' पू०) बुदेलखण्ड मे बाका पहाडा जागीर का स्वामी बुदेल०, पृ० १४०, इम्पीरियल, गेजे, ६, पृ० ३८१

भगवानदास-पिता राजा नरसिंहदेव बुदेला

ओरछा के सुविख्यात राजा नरसिंहदेव (वीरसिंहदेव) बुदेला का पुत्र दतिया राज्य का सस्थापक तथा प्रथम शासक वशावली, (पृ० ६) मे उसका नाम भगवतराय' दिया है बुदेल०, पृ० १४०, ३६३

भारत बुदेला, राजा

चदेरी के शासक रामशाह का पौत्र और सग्रामशाह का उत्तराधिकारी पुत्र चदेरी का शासक (१६१२-१६३४ ई०) मा० उ० (हि०) १, पृ० २६१-२६३ वशावली पृ० ३-४

भारमल-पिता किशनसिंह राठौड

किशनगढ के शासक किशनसिंह का तृतीय पुत्र शाहजहाँ का विश्वस्त सेनानायक रेऊ प्राचीन०, ३ पृ० ३६६-३७०

भीम-पिता राजा बिट्ठलदास

राजा बिठ्ठलदास गौड का तृतीय पुत्र धरमाट के युद्ध मे शाही सेना की ओर से लडा और घायल हुआ, बाद मे शामूगढ के युद्ध मे काम आया मा० उ०, (हि०) १, पृ० २४२, ख्यात० १, पृ० २२६, वही०, पृ० ४५

भीम राठौड़

उग्रसेन चन्द्रसेनोत क द्वितोय पुत्र कल्याणदास का लडका. पटना-हाजीपुर के युद्ध मे शाहजहाँ की ओर से लडते हुए बहुत घायल हुआ था. शाहजहाँ का विश्वस्त सेनानायक था ख्यात० १. पृ० ६५, १५७-१५८.

भीम, राव

लगभग १६५० ई० के बाद नियुक्त निम्न श्रेणीय शाही मनसबदार इसक कुल, स्थान आदि की कोई जानकारी प्राप्त नही है

भेरजी-जमींदार बगलाना

बगलाना का जमीदार (लगभग १६३५–१६३८ ई०) बगलाना–सूवा गुजरात मे सूरत सरकार और सूबा मालवा मे नन्दुरबार सरकार के मध्य का पहाडी क्षेत्र (वर्तमान नासिक जिले में बगलाना और कलवान तालुको का क्षेत्र) बगलाना राज्य की राजधानी मुल्हेर (२०°४६' उ०, ७४°७' पू०) मा० उ०, (हि०), १, पृ० २६८-२७१, आईन०, २, पृ० २५७, बम्बई० गेजे०, जिल्द १६ पृ० ४५७-४५८. 'गायकवाड ओरियण्टल सीरीज,' क्रमाक ५, रुद्र कवि रचित 'राष्ट्रौढवश महाकाव्यम्' मे भेरजी के पिता-मह नारायणशाह तक का भेरजी के पूर्वजो का विवरण है

भोजराज कछवाहा

आंबेर के कछवाहा राजा पृथ्वीराज के पुत्र जगमाल का प्रपोत्र और खगार के छोटे पुत्र मनोहरदास का छोटा लडका खगार का पुत्र बाघ नि.सतान था अत उसने मनोहरदास खगारोत के पुत्र भोजराज को गोद ले लिया. १६३० ई० मे खानजहाँ लोदी के साथ लडाई मे बाघ काम आया, तब भोजराज उसका उत्तरा-धिकारी बना. भोजराज खगारोत कछवाहा शाही मनसबदार बना और तब बाद मे उसे नराणा की जागीर मिली भोजराज बहुत ही योग्य और समझदार था, जिससे उसकी निरतर उन्नति होती

गई. नैणसी०, (राप्रप), १, पृ० ३०५; नैणसी० २, पृ० २३-२४, देवी० शाह०, २, पृ० २१३.

भोजराज पिता रायसल दरबारी

खण्डेले के स्वामी रायसल सूजावत (रायसल दरबारी) का तृतीय पुत्र शेखावाटी मे उदयपुर का स्वामी जुलाई १३, १६४० ई० मे बादशाह के तुलादान के समय भोजराज के मनसब मे वृद्धि कर १००० हजारी जात–५०० पांच सौ सवार का कर दिया था नैणसी०, २, पृ० ३५-३६, देवी० शाह०, २, पृ० ७१, खण्डेले०, पृ० ४१, ५५

भोजराज दखिनी

अहमदनगर शासन द्वारा नियुक्त औसा का किलेदार जो अक्तूबर १६३६ ई० मे आत्म-समर्पण कर शाही मनसबदार बन गया यदुनाथ सरकार (औरंग०, १, पृ० ३६) ने इसका नाम भोजबल दिया है और इसे राजपूत जाति का लिखा है, किन्तु यह ठीक नही है, क्योंकि भोजबल धोड़प का किलेदार था और भोज-राज से कोई चार महिने पूर्व १६३६ ई० मे ही उसे मनसब १५०० जात–८०० सवार का शाही मनसब मिल गया था. नामों में साम्य होने के कारण ही यदुनाथ सरकार को यह भ्राति हुई है पा० ना०, १-ब, पृ० २२०, देवी०, शाह०, १, पृ० १८६, १६५, शिवचरित्र०, पृ० १८०

औसा–(१८ १५' उ०, ७६ ३३' पू०) उदगिर के सुज्ञात किले से ४३ मील पश्चिम दक्षिण पश्चिम मे

मगूजी दखिनी

मगूजी (माणकोजी) निबालकर दक्षिण मे सन् १६३६ ई० की मुगल चढाइयो मे उसने सक्रिय भाग लिया था शिव चरित्र०, पृ० १७८ यह माणकोजी निंबालकर घराने की किस शाखा का था इसकी जानकारी नही है

मगूजीराम दक्खिनी

उसका उल्लेख पा० ना०, २, मे भी नही है स्पष्टतया कोई निम्न श्रेणि का मनसवदार रहा होगा, जो सन् १६३७ ई० के लगभग मर गया या शाही सेवा छोड कर चला गया होगा उसके बारे म कोई निश्चित जानकारी मिलनी सभव नही जान पडती है

करन्द, राय

माणिक्चद खत्री का पुत्र वदायूँ मे मुगल अधिकारी वदायूँ, डि० गेजे०, (१९०७) पृ० १४४

मथुरादास कछवाहा

आम्बेर के शासक राजा पृथ्वीराज के पुत्र गोपालदास का प्रपौत्र और मनोहरदास नाथावत का दूसरा लडका. नैणसी०, २, पृ० १९-२०

मनरूप कछवाहा, राजा

आम्बेर के शासक राजा भारमल के पुत्र राजा जगन्नाथ का सातवाँ लडका तब टोडा जागीर का स्वामी नैणसी०, २, पृ० १७-१८

मनोहरदास-भाई बिट्ठलदास

राजा गोपालदास गौड का कनिष्ट पुत्र और राजा बिट्ठलदास गौड का भाई मनोहरदास की पुत्री का विवाह जोधपुर राजा जसवर्तासह के साथ हुआ था वम्वू० (३, पृ० ४७३) ने भ्रमवश ही मनोहरदास को राजा विठ्ठलदास गौड का भतीजा लिखा है वही०, पृ० २०५; स्यात०, १, पृ० २५७

महासिंह, राजा-पिता राजा कुंवरसेन

किश्तवार क्षेत्र के शासक कुंवरसेन का सबसे छोटा पुत्र पजाब० (२, पृ० ६५२) के अनुसार सन् १६६२ ई० मे किश्तवा का शासक बना

महासिंह, राजा–पिता राजा बदनसिंह

आगरा जिले मे भदावर क्षेत्र के राजा बदनसिंह भदोरिया का उत्तराधिकारी पुत्र भदावर का राजा (१६५३–१६८३ ई०) मा० उ०, (हि०), १, पृ० १०६-१०७, आगरा डि०, गेजे०, (१९०५), पृ० ८६

महेशदास–पिता दलपत राठौड

मोटा राजा उदयसिंह के चौथे पुत्र दलपत का लडका १६४२ ई० मे उसे जालौर का परगना वतन के तौर पर दिया गया मा० उ०, (हि०), १, पृ० २८२-२८३

महेशदास राठौड

सूरजमल चांपावत का पुत्र सन् १६३८ ई० मे शाहजहाँ ने परगना आलणपुर दिया था ख्यात०, १, पृ० २५३

माधोसिंह सीसोदिया

श्यामसिंह उदयसिहोत का दूसरा पुत्र उसने श्याम नगा उदयसिहोत के साथ मिल कर हरदास झाला को मारा था नैणसी०, १, पृ० ६१, २, पृ० ४७४

माधोसिंह हाडा–पिता राव रतन

बूदी के राव रतन हाडा का द्वितीय पुत्र और कोटा राज्य का सस्थापक (१६३१-१६४८ ई०)

मानसिंह–पिता राजा विक्रमाजीत

सभवत शाहजहाँ के कट्टर समथक और विश्वस्त अ[illegible]
राजा विक्रमाजीत सुन्दरदास रायरायाँ का पुत्र

मानसिंह गुलेरी, राजा

गुलेर राज्य के शासक राजा रूपचन्द का पुत्र
शासक (१६३५–१६६१ ई०) स्वामिभक्त शाही
शाही सेना की ओर से नूरपुर, मउकोट, तारागढ,
अनेक युद्ध मे भाग लिया था पजाब०, १, पृ० २०४

मानीदास, राय

शाहजहाँ के शासन काल के प्रथम पाँच वर्षों में दफ्तर-इ-तन का प्रमुख अधिकारी रहा था. शाही नौकरों के वेतन और तलब संबंधी लेखा-जोखा रखता था. वृद्धावस्था के कारण पाँचवें वर्ष में उसके स्थान पर मीर अब्दुल लतीफ को दीवान-इ-तन नियुक्त किया गया. सेवा निवृत होने के कुछ ही समय बाद संभवतः राय मानीदास की मृत्यु हो गई होगी. पा० ना० के इसी उल्लेख को दोहराते समय कम्बू० (३, पृ० ४६६) में भ्रमवश और असावधानी के कारण उसका नाम 'मुकुन्ददास' लिखा है. देवी० शाह०, १, पृ० ७१; इब्न हसन कृत दी सेन्ट्रल स्ट्रकचर ऑफ दी मुगल एम्पायर पृ० २०४, २०६; सरकार, मुगल०, पृ० ४६-४८.

मालूजी दक्खिनी–भाई खीलूजी

विठोजो भोसले का पुत्र और खिलोजी और परसूजी का भाई. दक्षिणी सेना का सेनानायक. पहिले निजामशाही सेना मे था. शाहजहाँ के समय मे शाही मनसबदार बना. मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३०४-३०८.

माहरू–पिता राजा जयसिंह

स्पष्टतया यह उल्लेख कम्बू० (३, पृ० ४७०) ने भ्रमवश ही किया है. राजा जयसिंह के 'माहरू' नाम का कोई पुत्र नहीं था. यह उल्लेख नाहर पिता राजसिंह खीवकरणोत का होना चाहिये.

मित्रसेन–भाई राजा श्यामसिंह तंवर

ग्वालियर के अंतिम शासक रामशाह के पुत्र शालिवाहन का द्वितीय पुत्र, जो कुछ समय तक ग्वालियर किले का किलेदार भी रहा था. रोहतासगढ (बिहार) मे उसका एक शिलालेख संवत् १६८८ वि० (१६३१ ई०) का मिला है. ओझा, राजपूताना, (द्वितीय संस्करण), १, पृ० २६७; जरनल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, जिल्द ८ (ओल्ड सीरिज) पृ० ६६५.

मुकुन्द जादों

करौली राज्य के राजा द्वारकादास का पुत्र. सन् १६०४ ई० में करौली राज्य की गद्दी पर बैठा.

मुकुन्ददास–पिता राजा गोपालदास गौड़

राजा गोपालदास गौड का पुत्र उसके बारे मे कोई विशेष जानकारी प्राप्य नही है.

मुकुन्ददास राठौड़

रतनसिहोत जोधा सादूल का पुत्र. बाकीदास०, पृ० ६६–क्र० ७६३; रेऊ, मारवाड़०, १, पृ० १८६, २०४

मुकुन्ददास, राय

नारनौल का निवासी. शाहजहां का विश्वस्त अधिकारी दीवान-इ-तन (खालसा का दीवान) और दीवान-इ-वयूतात (कारखानो का दीवान) रहा था. मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३०६-३१०; सरकार, मुगल०, पृ० ४४-४६, देवी० शाह०, २, पृ० १०६, २३३.

मुकुन्दसिह हाड़ा–पिता माधोसिंह

कोटा का शासक (१६४८ ई०-१६५८ ई०). धरमाट के युद्ध मे काम आया मा० उ०, (हि०), १, पृ ३११-३१२.

मुरारदास गौड़

उसके बारे मे कोई जानकारी प्राप्य नही है

मोहनसिंह–पिता माधोसिंह हाड़ा

माधोसिंह का द्वितीय पुत्र धरमाट के युद्ध मे काम आया. कम्बू० (३, पृ० ४७३) मे उसके पिता का नाम मालोसिह' दिया है, जो अशुद्ध है

रभाजी

सन् १६४७ ई० के बाद नियुक्त निम्न श्रेणीय मनसबदार. सभवत: औरगजेब के समय १,५०० जात १,२०० सवार मनसव

का मराठा मनसबदार (आ० ना०, पृ० २६३) रंभाजी दक्खिनी यही हो. परतु वह कहा का था ? किस कुल का था ? यह जानकारी नही मिलती है.

रघुनाथ–जमींदार सूसघ

पूर्वी वगाल मे मैमनसिंह जिले की उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित नेत्रकोणा उपखण्ड के अतर्गत सूसघ परगने का जमीदार. वहारिस्तान०, १, पृ० ४०; २, पृ० ८०७.

रणछोड़–भाई राजा बिट्ठलदास

राजा गोपालदास गौड का पुत्र और राजा बिट्ठलदास गौड का भाई. कम्बू० (३, पृ० ४८४) मे भ्रमवश ही उसे राजा विट्ठलदास का भतीजा लिखा है.

रतन राठौड़

महेशदास का ज्येष्ठ पुत्र. जालौर परगने का शासक (१६४७-१६५६ ई०). १६५६ ई० मे जालौर के वदले रतलाम परगना वतन के रूप मे दिया गया धरमाट के युद्ध में काम आया. रतलाम०, पृ० ७१, ९३.

रतन हाड़ा, राव

राव भोज का ज्येष्ठ पुत्र. वूंदी का शासक (१६०७ ई०-१६३१ ई०). जहांगीर ने सरवुलदराय एव राव राजा की पदवी दी. मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३१७-३२०.

रवीराय दक्खिनी

अहमद नगर के निजामशाही सुलतानो का सुप्रतिष्ठित सरदार नावजी शिंदे 'रवीराय दक्खिनी' नाम से मुगल दरवार मे सुज्ञात हुआ. नसीरी खाँ ने उसे मुगल मनसब दिलवाया था (रविवार, सितम्बर ५, १६३० ई०). शिव-चरित्र०, पृ० १२७. फारसी की अपूर्ण लिपि के कारण ही 'शिंदे' अथवा 'सिंधिया' को 'साठे' अथवा 'साठिया' पढ लिया गया है. पा० ना०, २ (१६३७-१६४७ ई०) की हो सूची मे उसका नाम है. अन्यत्र कहीं न तो

उसका नाम मिलता है और न अन्य कोई जानकारी ही शिव-चरित्र०, पृ० १३३, देवी० शाह०, २, नामावली, पृ० ४३

राजरूपसिंह, राजा

राजा वासू का पौत्र और राजा जगतसिंह का पुत्र नूरपुर का शासक (१६४६–१६६१ ई०) योग्य, वीर और साहसी मनसबदार. क्रमश कांगडा के पार्वत्य प्रदेश का फौजदार, चोबी, कन्धार और जमरूद का दुर्गाध्यक्ष. उत्तराधिकार युद्ध के प्रारम्भ मे शाही सेना की ओर परन्तु बाद मे औरगजेब का कृपा पात्र मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३२१-३२४, पजाब०, १, पृ० २५५-२५६

राजसिंह–पिता खींवा राठौड

खीवकरण कूंपावत राठौड का द्वितीय पुत्र आसोप का स्वामी और जोधपुर के शासक राजा जसवतसिंह का प्रथम प्रधान मत्री था कूंपावत०, पृ० १८५, २१३, २२६, ख्यात० १, पृ० २५२-२५३, देवी० शाह०, २, पृ० ४२-४३.

राजसिंह, राणा

मेवाड का शासक (१६५२–१६८० ई०)

रामदास नरवरी, राजा

आम्बेर के शासक राजा पृथ्वीराज क पुत्र राजा भीमसिंह का प्रपौत्र और राजसिंह आसकरणोत का ज्येष्ठ पुत्र तब सूबा आगरा मे नरवर सरकार के अन्तर्गत सुविख्यात नरवर किले का किलेदार और परगने का स्वामी नैणसी०, २ पृ० ११ १२, मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३३९-३४०.

रामसिंह–पिता करमसी राठौड

जोधपुर के राव चन्द्रसेन के पौत्र करमसी का लडका शाहजहाँ का विश्वस्त सेनानायक शामूगढ के युद्ध मे काम आया मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३४६-३४७

रामसिंह–भाई पृथ्वीराज राठौड

भारमलोत राठौड बल्लू तेजसियोत का छोटा पुत्र और

पृथ्वीराज का भाई. उसका पुत्र उदयसिंह धरमाट के युद्ध मे काम आया कविराजा०, २, पृ० १५७; ख्यात०, १, पृ० २०८,

रामसिंह कछवाहा–पिता राजा जयसिंह

आम्बेर के शासक मिर्जा राजा जयसिंह का उत्तराधिकारी पुत्र. आम्बेर का शासक (१६६७-१६८८ ई०) मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३४२-३४४.

रायबा भाई–रावत दक्खिनी

सभवत. शाही मराठा सेनानायक रावत राय धनगर का भाई. वग्नू० (३, पृ० ४८३) मे भ्रमवश और असावधानी के कारण ही 'रायबा' के स्थान पर 'राना' लिखा है.

रायबा–भाई जादोराय दक्खिनी

संभवत. सिंदखेड के जाधव विठोजी का प्रपौत्र और जादोराय (लक्खोजी) के पौत्र जादोराय (पतगराव) का भाई.

अथवा वह रायबा जादोराय (लक्खोजी) का पुत्र (भाई नही) रायाजी हो सकता है, जो जीजा बाई का सगा भाई था, और जिसके पुत्र खंडोजी के वशज ने जाधवो की भुइज शाखा की स्थापना की थी. हिस्टारिकल०, पृ० ४६.

मा० उ० या पा० ना० मे उक्त भाई या पुत्र को मनसब दिये जाने का कोई उल्लेख नही होने के कारण इस बारे में निश्चयात्मक रूपेण कुछ भी कह सकना सभव नही है.

रायरायाँ (राय रघुनाथ)

खालसा और बादशाही दफ्तर का प्रमुख अधिकारी. सन् १६५६ ई० में रायरायाँ की पदवी प्रदान कर उसे दीवानी का कार्य सोंपा गया. औरगजेब ने उसे राजा की पदवी दी थी. मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३१६.

रायसिंह–पिता अमरसिंह

जोधपुर के शासक गजसिंह के बडे लडके अमरसिंह का बडा पुत्र. नागोर का स्वामी मा० उ०, (हि०), १, पृ० ७५-७६.

रार्यसिंह झाला

हरदास का ज्येष्ठ पुत्र हरदास के देहान्त के बाद मेवाड के सादडी ठिकाने का स्वामी कोई दस वर्ष तक शाही सेवा मे रहा. नैरासी०, २, पृ० ४७४, ओझा उदयपुर०, २, पृ० ८७३

रार्यसिंह सीसोदिया, राजा–पिता महाराजा भीम

राणा अमरसिंह के तृतीय पुत्र महाराजा भीम का पुत्र शाहजहाँ ने उसे राजा की पदवी प्रदान की मा० उ० (हि०) १, पृ० ३६३-३६७.

रावतराय धनगर, दक्खिनी

सन् १६३० ई० और १६३३ ई० को मुगल चढाईयो के समय यह रावतराय सुविख्यात मुगल सेनानायक शायस्त खाँ की सेना मे था पर्णालाख्यान० (अध्याय ५, श्लोक ६५, ६६, १०२) मे जिस दीपाजी रावतराय की वीरता का विवरण है, सभवत वह इसी रावतराय का पुत्र हो तत्कालीन इतिहास सबधी मराठी या ग्रन्य इतिहास-ग्रन्यो मे धनगर कुल के रावतराय नामक इस उच्च स्तरीय शाही मनसबदार सबधी कोई जानकारी कही भी नही मिलती है शिव चरित्र०, पृ० १२३, १७६

रूपचन्द गुलेरी

गुलेर राज्य के शासक राजा जगदीशचन्द का पुत्र जो अपने भाई देवीचन्द (विजयचन्द) के बाद गद्दी पर बैठा गुलेर का शासक (१६१०–१६३५ ई०) जहाँ० व्रज०, पृ० ६६५, पजाब०, १, पृ० २०२-२०४

गुलेर (ग्वालियर)–ईसा की १५ वी सदी के प्रारम्भ मे काँगडा के राजा हरिचद द्वारा सस्थापित अलग राज्य राजधानी गुलेर (३२°०' उ०, ७६°१०' पू०) फारसी इतिहास ग्रन्थो मे इसका नाम ग्वालियर भी मिलता है

रूपसिंह–पोता किशनसिंह राठोड़ का

मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह (किशनगढ राज्य का सस्थापक) का पौत्र और भारमल का लडका किशनगढ का शासक (१६४४–१६५८ ई०). शामूगढ के युद्ध मे काम आया. मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३६८-३७०.

रूपसिंह कछवाहा

सभवत. नरूका रायोदास का पुत्र. अधिक जानकारी प्राप्य नही है. नैणसी०, २, पृ० २८

रूपसिंह चन्द्रावत, राव

राव चादा का पौत्र और रूक्मागद का पुत्र रामपुरा राज्य का स्वामी. नैणसी०, १, पृ० १००, मा० उ०, (हि०), १, पृ० २१४-२१५.

समीसेन चौहान

अजाऊँ का जमीदार.

अजाऊँ–सूबा दिल्ली के अन्तर्गत सरकार बदाऊँ का महल, जहाँ तब चौहानो का प्रभुत्व था रामगगा के उत्तरी तट पर स्थित यह अजाऊँ गाव अब उजड गया है उस अजाऊँ महल का क्षेत्र अब जिला बरेली के आँवला परगने मे सम्मिलित है बरेली डि० गेजे०, (१६११), पृ० १६०

शिवराम गौड़–पिता बलराम

राजा गोपालदास गौड के ज्येष्ठ पुत्र बलराम का लडका. सूबा मालवा मे सरकार सारगपुर के अन्तर्गत घदेरा परगना वतन के रूप मे प्राप्त हुआ (१६३६ ई०) शामूगढ के युद्ध मे शाही सेना की ओर से लडता हुआ काम आया मा० उ०, (हि०), १, पृ० २४०, ४३०-४३१.

शेरसिंह–पिता रामसिंह राठोड

जोधपुर के राव चन्द्रसेन के पौत्र करमसी के ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह का लडका. कम्पू० (३, पृ० ४७४) मे समवत भ्रमवश

'शेरसिंह' के स्थान पर 'सबलसिंह' लिखा है, क्योंकि रामसि राठौड के सबलसिंह नाम का कोई पुत्र नही था. बाकीदास० पृ० ८५-क्र० ९४१.

श्यामसिह–पिता करमसो राठौड़

जोधपुर के शासक राव चन्द्रसेन के पौत्र करमसी का लडका भिणाय (अजमेर) का स्वामी अजमेर०, पृ० २९२-२९३, बाकीदास०, पृ० ८५-क्र० ९४२.

श्यामसिह सीसोदिया

सभवत. जगमाल उदयसिहोत का पुत्र. नैणसी०, १, पृ० ६२.

सग्राम, जमींदार गन्नोर

गन्नोर का जमीदार.

गन्नोर–(२२°४६' उ०,७७°३६' पू०) तब मालवा सूबा के अन्तर्गत रायसेन सरकार मे गोडो की प्रमुख जमीदारी का केन्द्र-स्थान और सुदृढ किला. भोपाल० गेजे०, (१९०७), पृ० १०४-१०५.

सग्राम कछवाहा–(पेड़) पोता राजा मानसिंह का

आम्बेर के शासक राजा मानसिंह के ज्येष्ठ पुत्र जगतसिंह का पौत्र और जुझारसिंह का वडा लडका इसी उल्लेख को दोहराते समय कम्बू० (३, पृ० ४७५) मे भ्रमवश ही *'श्याम भतीजा राजा मानसिंह का'* लिखा है स्पष्टतया यह उल्लेख राजा मानसिंह के प्रपोत्र सग्राम का हो है, नैणसी०, २, पृ० १३,१४

सकतसिंह चौहान

उसके बारे मे कोई जानकारी प्राप्त नही है.

सतरसाल–पिता राव सूर भुरटिया

बीकानेर के शासक सूर भुरटिया का द्वितीय पुत्र ओझा, बीकानेर० १, पृ० २२८,

सतरसाल कछवाहा

आम्बेर के शासक राजा भगवानदास ने पुत्र माधोसिंह का लड़का. नैणसी० (२, पृ० १६) मे उसका नाम 'छत्रसिंह' दिया है.

सतरसाल हाड़ा, राव-पोता राव रतन का

राव रतन का उत्तराधिकारी पौत्र और गोपीनाथ का पुत्र. बूंदी का शासक (१६३१-१६५८ ई०). शामूगढ के युद्ध मे काम आया मा० उ०, (हि०), १, पृ० ४०१-४०५.

सबलसिंह-पिता राजा विक्रमाजीत

शाहजहाँ के विश्वस्त अधिकारी सुन्दरदास ब्राह्मण राजा विक्रमाजीत रायरायाँ का छोटा लडका.

सबलसिंह-पिता राजा सूरजसिंह राठौड़

जोधपुर के शासक राजा सूरजसिंह (सूरसिंह) का पुत्र और गजसिंह का छोटा भाई कविराजा०, २, पृ० २४४-२४५.

सबलसिंह जैसलमेरी, रावल

मेतसी रावल मालदेवोत का पौत्र और रावल दयालदास का पुत्र. शाहजहाँ ने उसे जैसलमेर प्रदान किया. जैसलमेर का शासक (१६५०-१६६० ई०). नैणसी०, २, पृ० ३४८-३५०.

सबलसिंह सीसोदिया

मेवाड के महाराणा अमरसिंह के पुत्र वाघ का लडका. ओझा, उदयपुर०, १, पृ० ५०८ पा० टि० ५०८.

सभाचंद राय

मुगल साम्राज्य का शासकीय अधिकारी. लाहोर का दीवान रहा पा० ना०, २, पृ० २७१; कम्बू०, २, पृ० ३०४, देवी० शाह०, २, पृ० ११.

समरसी, रावल-जमींदार बांसवाला

बांसवाड़ा राज्य का शासक (१६१५-१६६० ई०).

सारगधर–पोता राजा सग्राम का

जम्मू के जमीदार राजा सग्राम के पुत्र भोपत का उत्तराधिकारी पुत्र स्थानीय ख्याता मे उसका नाम 'हरिदेव' मिलता है. धरमाट के युद्ध मे वह औरगजेब के साथ था आ० मा०, पृ० ६२, पजाब०, २, पृ० ५३६

सुजानसिंह–पिता मोहकमसिंह

यह सुजानसिंह मोटा राजा उदयसिंह के लडके माधोसिंह के पुत्र केसरसिंह का बडा लडका था मोहकमसिंह वस्तुत उसका छोटा भाई था, भ्रमवश ही वारिस० (२ पृ० २०७) और कम्बू० (३, पृ० ४६७) ने उसे सुजानसिंह का पिता लिख दिया है सुजान सिंह ने अजमेर पीसागन ठिकाने की स्थापना की ख्यात०, १ पृ० १०८, वाकीदास० पृ० २४ क्र० २४२, पृ० ८५ ८६ क्र० ६४५, ६४६, अजमेर०, पृ० २६८, वही० पृ० २५०,२५७

सुजानसिंह बुदेला

ओरछा के शासक पहाडसिंह बुन्देला का उत्तराधिकारी पुत्र ओरछा का शासक (१६५४–१६६८ ई०) मा० उ०, (हि०), १, पृ० ४३५-४३६

सुजानसिंह सीसोदिया

मेवाड के शासक राणा अमरसिंह के द्वितीय पुत्र सूरजमल का बडा लडका अजमेर सूबे की चित्तौड सरकार मे उसे प्राप्त फूलिया परगने मे शाहपुरा नगर बसाया शाहपुरा राज्य का स्वामी (१६३१–१६५८ ई०) मा० उ०, (हि०), १ पृ० ४३२ ४३३

सुलतान सीसोदिया

सुप्रसिद्ध चूण्डा के पुत्र काधल के पौत्र खगार के पुत्र और बेंगू ठिकाने के स्वामी गोविन्ददास के पुत्र अचलदास का लडका नैणसी मे उसका नाम नही दिया है उसका पुत्र रूक्मागद शाही सेना की ओर से लडता हुआ धरमाट के युद्ध मे घायल हुआ था

नैणसी०, १, पृ० ३३-३४; ख्यात०, १, पृ० २०८; ओझा, उदय-पुर०, १. पृ० ४८०; २. पृ० ८६४-८६५.

सुन्दरदास, सीसोदिया

गोकुलदास भाणोत शक्तावत का पुत्र और सावर का स्वामी. नैणसी०, १, पृ० ६६. अजमेर० पृ० ३०१.

सूर सूरटिया, राव

बीकानेर के शासक रायसिंह का द्वितीय पुत्र और उत्तराधिकारी (१६१३-१६३१ ई०). मा० उ०, (हि०), १, पृ० ४५६-४५७.

हठीसिंह, राव-पिता राव दूदा चन्द्रावत

रामपुरा के राव दूदा का उत्तराधिकारी पुत्र और रामपुरा का स्वामी. पा० ना० (१, पृ० ३०५) में सम्भवतः प्रतिलिपिकार की असावधानीवश इसका नाम 'मयीसिंह' लिखा है. मा० उ०, (हि०), १, पृ० २१४, नैणसी०, १, पृ० १००.

हनुमतराय

इसके बारे में कोई जानकारी प्राप्य नहीं है.

हमीर, राय

इसका उल्लेख न तो पा० ना० में है और न वारिस० में. और किसी भी प्रकार की कोई जानकारी कहीं भी प्राप्य नहीं है. मनसब में साम्य होने के कारण एक अनुमान यह होता है कि सम्भवत वारिस० मे 'भीमराय' के उल्लेख का ही यह विकृत स्वरूप हो.

हमीरराय दक्खिनी

'हंबीरराय'-मराठों में चव्हाण वंशीय मोहिते घराने के प्रमुख की उपाधि जो सम्भवतः उन्हें निजामशाही सुलतानों से प्राप्त हुई थी. पा० ना० (१. पृ० २६७) का यह हमीरराय वही हो सकता है, जो भातवाडी के युद्ध में शाहजी की ओर से लड़ा था. इसी हणगोजी मोहिते हमीरराय की पुत्री तुकाबाई का विवाह

शाहजी भोसले क साथ हुआ था दौलताबाद के किले के घेरे के समय ही हमीरराय मोहिते मुगला से जा मिला और मुगल मनसबदार बन गया परन्तु उसके बाद अधिक समय तक वह जीवित नही रहा, और सन् १६३४ ई० मे उसकी मृत्यु हो गई मलिक अम्बर, पृ० ११६, शिव भारत सर्ग ४, श्लोक १३, शिव चरित्र० पृ० १५८

हमीरसिंह सीसोदिया

दूदा सांगावत सीसोदिया का पौत्र और ईश्वरदास का ज्येष्ठ पुत्र सन् १६४५ ई० मे शाही मनसबदार बना वारिस० (२ पृ० २१०) मे भ्रमवश ही उसका नाम सुमेरसिंह लिखा है नैणसी०, १, पृ० ३५, देवी० शाह० २ पृ० १६६

हरचन्द–पिता राजा बिट्ठलदास

राजा गोपालदास गौड क लडके राजा विट्ठलदास गौड का कनिष्ट पुत्र मा० उ० (हि०) १ पृ० २४२ म उसका नाम 'हरयश दिया है

हरचद कछवाहा, राय

उसके बारे मे कोई जानकारी प्राप्य नही है

हरजन–पिता गिरधरदास गौड

राजा गोपालदास गौड के पुत्र और राजा बिट्ठलदास गौड के भाई गिरधरदास का लडका कम्बू० (३, पृ० ४८२) मे स्पष्टतया भ्रमवश और असावधानी के कारण ही उसका नाम हरजस' और उसके पिता का नाम गिरधरदास तवर' लिखा है

हरदास झाला

मेवाड क सुप्रसिद्ध वीर झाला अज्जा क प्रपौत्र वीदा का पौत्र तथा देदा का उत्तराधिकारी पुत्र और मेवाड क सादडी ठिकाने का स्वामी नैणसी०, २, पृ० ४७४, ओझा उदयपुर० २, पृ० ८७२-८७३

हरदेनारायण

राव भोज हाडा का द्वितीय पुत्र. दिसम्बर १६२० ई० मे उसका मनसब ६००–६०० सवार का था जहां० व्रज०, पृ० ७०१.

हरदेराम–पिता बांका कछवाहा

बाका कछवाहा का पुत्र. उसके पिता को अकबर के समय मे ४ सदी का मनसब था. आईन०, (द्वितीय सस्करण), १. पृ० ५५५.

हरराम–पिता भगवानदास कछवाहा

आम्वेर के शासक राजा भारमल के पुत्र राजा भगवानदास का लडका नैणसी० (२, पृ० १३) मे उसका नाम 'हरदास' दिया है.

हरीसिंह–पिता चन्द्रभान नरूका

उणियारा ठिकाने के सस्थापक चन्द्रभान जैतसिंहोत नरूका का पुत्र. चन्द्रभान की मृत्यु के बाद उणियारा ठिकाने का स्वामी.

हरीसिंह–पिता राव चांदा

रामपुरा के स्वामी राव चादा का छोटा पुत्र. ख्यात०, १, पृ० २८८.

हरीसिंह राठौड़–पिता किशनसिंह

जोधपुर के शासक मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र और राजा सूरसिंह के भाई किशनसिंह का कनिष्ट पुत्र. किशनगढ के सस्थापक राजा किशनसिंह के द्वितीय पुत्र जगमाल की मृत्यु के बाद किशनगढ का शासक (१६२६-१६४४ ई०) पा० ना० (२, पृ० ७३१) मे भ्रमवश ही उसे राजा सूरसिंह का छोटा भाई लिखा है. रेऊ, प्राचीन०, ३, पृ० ३७०, मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३६८

हाबाजी (देवरिया अथवा पूरिया)

सही नाम 'बाबाजी भोसले'. शाहजहां के शासन-काल मे दक्षिण मे सन् १६३० ई० के बाद की मुगल सेना की विभिन्न

शाहजी भोसले के साथ हुआ था. दौलताबाद के किले के घेरे के समय ही हमीरराय मोहिते मुगलो से जा मिला और मुगल मनसबदार बन गया परन्तु उसके बाद अधिक समय तक वह जीवित नही रहा, और सन् १६३४ ई० मे उसकी मृत्यु हो गई मलिक अम्बर, पृ० ११६; शिव भारत, सर्ग ४, श्लोक १३; शिव चरित्र० पृ० १५८

हमीरसिंह सीसोदिया

दूदा सांगावत सीसोदिया का पौत्र और ईश्वरदास का ज्येष्ठ पुत्र. सन् १६४५ ई० मे शाही मनसबदार बना. वारिस० (२, पृ० २१०) मे भ्रमवश ही उसका नाम सुमेरसिंह लिखा है. नैणसी०, १, पृ० ३५; देवी० शाह०, २, पृ० १६६.

हरचन्द–पिता राजा बिट्ठलदास

राजा गोपालदास गौड के लडके राजा बिट्ठलदास गौड का कनिष्ट पुत्र मा० उ०, (हि०) १ पृ० २४२ मे उसका नाम 'हरयश' दिया है

हरचद कछवाहा, राय

उसके बारे मे कोई जानकारी प्राप्य नही है.

हरजन–पिता गिरधरदास गौड़

राजा गोपालदास गौड के पुत्र और राजा बिट्ठलदास गौड के भाई गिरधरदास का लडका. कम्बू० (३, पृ० ४८२) मे स्पष्टतया भ्रमवश और असावधानी के कारण ही उसका नाम 'हरजस' और उसके पिता का नाम 'गिरधरदास तवर' लिखा है.

हरदास झाला

मेवाड के सुप्रसिद्ध वीर झाला अज्जा के प्रपौत्र वीदा का पौत्र तथा देदा का उत्तराधिकारी पुत्र और मेवाड के सादडी ठिकाने का स्वामी. नैणसी०, २, पृ० ४७४; ओझा, उदयपुर०, २, पृ० ८७२-८७३.

देनारायण

राव भोज हाडा का द्वितीय पुत्र. दिसम्बर १६२० ई० मे सका मनसब ९००–६०० सवार का था. जहाँ० ब्रज०, पृ० ७०१.

रदेराम–पिता बांका कछवाहा

वाका कछवाहा का पुत्र. उसके पिता को अकबर के समय में ४ सदी का मनसब था. आईन०, (द्वितीय सस्करण), १, पृ० ५५५.

हरराम–पिता भगवानदास कछवाहा

आम्बेर के शासक राजा भारमल के पुत्र राजा भगवानदास का लडका. नैणसी० (२, पृ० १३) मे उसका नाम 'हरदास' दिया है.

हरीसिह–पिता चन्द्रभान नरूका

उणियारा ठिकाने के संस्थापक चन्द्रभान जैतसिहोत नरूका का पुत्र. चन्द्रभान की मृत्यु के बाद उणियारा ठिकाने का स्वामी.

हरीसिह–पिता राव चांदा

रामपुरा के स्वामी राव चादा का छोटा पुत्र. ख्यात०, १, पृ० २५८.

हरीसिह राठौड़–पिता किशनसिंह

जोधपुर के शासक मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र और राजा सूरसिंह के भाई किशनसिंह का कनिष्ट पुत्र. किशनगढ के सस्थापक राजा किशनसिंह के द्वितीय पुत्र जगमाल की मृत्यु के बाद किशनगढ का शासक (१६२९-१६४४ ई०). पा० ना० (२, पृ० ७३१) मे भ्रमवश ही उसे राजा सूरसिंह का छोटा भाई लिखा है. रेऊ, प्राचीन०, ३, पृ० ३७०; मा० उ०, (हि०), १, पृ० ३६८.

हावाजी (देवरिया अथवा पूरिया)

सही नाम 'बाबाजी भोसले'. शाहजहाँ के शासन-काल मे दक्षिण मे सन् १६३० ई० के बाद की मुगल सेना की विभिन्न

चढ़ाइयो में उसने समय-समय पर सक्रिय भाग लिया था. धरमाट के युद्ध में वह औरंगजेब के साथ था. शिव चरित्र० पृ० १२६, १७६; श्रा० ना०, पृ० ४५, ६३, ५४.

यह बाबाजी भोसले उक्त घराने की किस शाखा विशेष का था, इसकी कोई जानकारी प्राप्त नही है.

हुब्बा सीसोदिया

'हुब्बा' स्पष्टतया राजस्थान मे अन्य किसी प्रचलित नाम का ही विकृत स्वरूप जान पड़ता है ।

अनुक्रमणिका

शुद्धि-पत्र

पृ० सं० ८४ 'चतुरभुज—भतीजा श्यामसिंह का' के स्थान पर 'चतुरसेन—भतीजा श्यामसिंह का, होना चाहिये.

पृ० सं० ८४ प० ४ नीचे से 'मनबस' के स्थान पर 'मनसब' होना चाहिये.

पृ० सं० ६६ 'राव दयालदास झाला' के स्थान पर 'रावत दयालदास झाला' होना चाहिये.

पृ० सं० २१, ३३ 'बरसिंगदास' के स्थान पर 'बरसिंहदास' होना चाहिये.

पृ० स० ३८ 'विजयराम, भाई राजा विट्ठलदास' के स्थान पर 'बिजयराम, भाई राजा विट्ठलदास' होना चाहिये.

पृ० सं० ३५ 'सग्रामसिंह, पोता राजा मानसिंह का' के स्थान पर 'सग्रामसिंह, पोता° राजा मानसिंह का' होना चाहिये.